Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِیَدِكَ الْخَیْرُ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

सात्पाहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 22

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

24 रमज़ान 1440 हिजरी कमरी 30 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 30 मई 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

इस्राईली सिलसिला का आख़िरी ख़लीफ़ा जो चौदहवीं सदी पर मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आया वह मसीह नासरी अलैहिस्सलाम था। मुक़ाबला में ज़रूर था कि इस उम्मत का मसीह भी चौदहवीं सदी के सिर पर आए। इस के अतिरिक्त अहले कशफ़ ने इसी सदी को बेअसत मसीह का ज़माना क़रार दिया जैसे शाह वली उल्लाह साहिब रहमहुल्लाह इत्यादि।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मसीह को इस ज़माना से क्या विशेषता है?

हाँ कुछ का हक़ है कि ये एतराज़ करें कि मसीह को इस ज़माना से क्या विशेषता है? क़ुरआन शरीफ़ ने इस्राईली और इस्माईली सिलसिलों में ख़िलाफ़त की समानता का खुला खुला इशारा किया है। जैसे इस आयत से ज़ाहिर है

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ۔

(अन्नूर :56) इस्राईली सिलसिला का आख़िरी ख़लीफ़ा जो चौदहवीं सदी पर मूसा अलैहिस्सलाम के बाद आया वह मसीह नासरी अलैहिस्सलाम था। मुक़ाबला में ज़रूर था कि इस उम्मत का मसीह भी चौदहवीं सदी के सिर पर आए। इस के अतिरिक्त अहल कशफ़ ने इसी सदी को बेअसत मसीह का ज़माना क़रार दिया जैसे शाह वली उल्लाह साहिब रहमहुल्लाह इत्यादि। अहले हदीस का इत्तिफ़ाक़ हो चुका है कि अलामात सुग़रा कुल(सारी छोटी निशानियां) और अलामात कुबरा(बड़ी निशानियां) एक हद तक पूरी हो चुकी हैं लेकिन इस में किसी क़दर उन की ग़लती है।अलामात कुल पूरी हो चुकीं। बड़ी भारी अलामत या निशान जो आने वाली की है वह बुख़ारी में

يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ الخ

(बुख़ारी, किताब अहादीस अल्अंबिया बाब नुज़ूल ईसाअलैहिस्सलाम) लिखा है। अर्थात नुज़ूल मसीह का समय इसाइयों के ग़लबा (प्रभुत्व)और सलीब की उपासना का ज़ोर है। अत: क्या यह वह वक़्त नहीं ? क्या जो जो कुछ पादरियों से पहुंच चुका है इस की उपमा आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक कहीं है ? हर मुल्क में फ़ित्ना पड़ गया। कोई ऐसा इस्लामी ख़ानदान नहीं कि जिस में से एक-आध उनके हाथ ना चला गया हो। अत: आने वाले का वक़्त सलीब की उपासना का ग़लबा है। अब इस से ज़्यादा क्या ग़लबा होगा।किस तरह दरिंदों की तरह इस्लाम पर द्वैष से हमले किए गए। कोई गिरोह है कि जिसने हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को निहायत जंगली शब्दों और गालियों से याद ना किया?अब अगर आने वाले का यह वक़्त नहीं तो बहुत जल्दी वह आया भी तो सौ साल को आएगा क्योंकि वह वक़्त मुजद्दिद का है। जिसकी बिअसत का ज़माना सदी का सिर होताहै। तो क्या इस्लाम में और ताक़त है कि एक सदी तक पादरियों के दिन प्रतिदिन ग़लबा का मुक़ाबला कर सके। ग़लबा हद तक पहुंच गया और आने वाला आ गया। अब हाँ वह दज्जाल को मज़बूत दलीलों से हलाक करेगा क्योंकि हदीसों में आ चुका है कि उस के हाथ पर मिल्लतों की हलाकत मुक़द्दर है ना लोगों की या मिल्लतों वालों की, तो वैसा ही पूरा हुआ।

मसीह मौऊद के समर्थन में आकाशीय निशान

एक यह भी निशान आने वाला का है कि इस ज़माना में रमज़ान में चांद सूरज ग्रहण होगा। ख़ुदा के निशान से उपहास करने वाला ख़ुदा से ठट्ठा करता है। चांद सूरज ग्रहण का उस के दावा के बाद होना यह एक ऐसी बात थी जो झूठ और बनावट से बहुत दूर है। इस से पहले कोई चांद सूरज ग्रहण ऐसा ना हुआ। यह एक ऐसा निशान था कि जिस से अल्लाह तआला को सारी दुनिया में आने वाले की मुनादी करनी थी अत: अरब वालों ने भी इस निशान को देखकर अपने मज़ाक़ के अनुसार दरुस्त कहा। हमारे इश्तिहार मुनादी के रूप में जहां-जहां ना पहुंच सकते थे वहां वहां इस चांद सूरज ग्रहण ने आने वाले के वक़्त की मुनादी कर दी। यह ख़ुदा का निशान था जो इन्सानी मन्सूबों से बिलकुल पाक था। चाहे कोई कैसा ही फ़लसफ़ी हो वह ग़ौर करे और सोचे कि जब निर्धारित निशान हो गया तो ज़रूर है कि इस का पूरा करने वाल भी कहीं हो। यह बात ऐसी ना था जो किसी हिसाब के अधीन हो। जैसे कि फ़रमाया था कि यह उस वक़्त होगा जब कोई महदी का दावा करने वाला हो चुकेगा। रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम से लेकर इस महदी तक कोई ऐसी घटना नहीं। अगर कोई तारीख़ से ऐसा साबित कर सके तो हम मान लेंगे।

एक निशान यह भी था कि इस वक़्त ज़ुस्सिन्नीन सितारा प्रकट करेगा। अर्थात उन बरसों का सितारा जो पहले गुज़र चुके हैं। अर्थात वह सितारा जो मसीह नासरी के दिनों (बरसों)में प्रकट हुआ था। अब वह सितारा भी चढ़ गया जिस ने यहूदियों के मसीह की सूचना आसमानी तौर से दी थी। इसी तरह क़ुरआन के देखने से भी पता लगता है

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ۔ وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ۔ وَاِذَا

शेष पृष्ठ 12 पर

125 वां जलसा सालाना कादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने 125वें जलसा सालाना कादियान के लिए 27,28 और 29 दिसंबर 2019 (दिनांक जुम्अ:,हफ़्ता और इतवार) की तारीख़ों की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। जमाआत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसा में शामिल होने की नीयत कर के तैयारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस लिल्लाहि जलसा से फ़ैज़याब होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। जलसा सालाना की हर लिहाज़ से कामयाबी और बाबरकत होने इसी तरह नेक फितरत लोगों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं जारी रखें। जज़ाकमुल्लाह ।

(नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-12)

हुकूमत के ओहदेदारों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात,प्रैस कान्फ्रैंस,जलसा सालाना बेल्जियम का तीसरा दिन,शैक्षिक ऐवार्ड का बांटना

जहां तक Islamophobia का सम्बन्ध है तो जमाअत अहमदिया हर प्लेटफार्म पर यही कहती है कि जो भी उग्रवादी कर रहे हैं, वे ग़लत कर रहे हैं। मुसलमानों की अक्सरीयत ये नहीं चाहती बल्कि इस से नफ़रत का इज़हार करती है। इसलिए हर जगह कोशिश करनी पड़ती है और कोशिश ही है और फिर आपकी जो मस्जिद है और मेम्बर है वहां मौलवियों और मुल्लाओं से कहें कि तुम लोग कोशिश करो कि जो तुम्हारे पास आते हैं बजाय उनको उग्रवादी बनाने कि उनको असल इस्लाम की शिक्षा दो और उनको बताओ कि असल इस्लाम की शिक्षा क्या है।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि ज़ालिम का हाथ रोको, इस की मदद करो, उस के लिए दुआ करो। अगर तुम हाथ से नहीं रोक सकते तो ज़बान से रोको , ज़बान से नहीं रोक सकते तो उस के लिए दुआ करो। यह उस के लिए मदद है।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

हुकूमत के ओहदेदारों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

आज मिशन हाऊस में ही कुछ मैंबरान पार्लीमेन्ट , सियासतदानों और अन्य हुकूमती लोगों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का एक प्रोग्राम रखा गया था। इस प्रोग्राम में निम्लिलिखित मेहमान शामिल हुए।

(1)Stefaan Plateauभूतपूर्व Brusselsदलबीक

(2)Francoise Schepmans मैंबर फैडरल पार्लीमैंट और मेयर Molenbeekहैं

उनके हमराह एक Councillorथे

(3) Kris Van Dijck मैंबर फ़लीमश पार्लीमैंट हैं और Desselके मेयर हैं

उनके हमराह उनकी एक मैंबर आई थी

(4)Marc Cools(काऊन्सिलर आफ़Ukkel)

(5)Stijn De Rosster मैंबर cabinet मेयर Bart de Wever (Antwerpen)

(6)मिस्टर Paulफैडरल पुलिस में हैं

अपने दोस्त के हमराह शिरकत की

(7)Wim Ceunen ये एक Priestहैं Sint Truidenमें

(8)Bosmans Maria, पा रूखी अस्सिटैंट

(9)Ludwig Vandenhove, डिप्टी गवर्नर Limburg

(10)Debock

एक राजनीतिज्ञ हैंजो अपनी पार्टी के लोकल सरबराह हैं अर्थात Ukkelके शहर में और मैंबर पार्लीमैंट हैं

ये अपने एक कोलीग Filip Moersके साथ आए थे

(11)Mrs. Fathiya Alami

एक लोकल राजनीतिज्ञ हैं Ukkelके शहर में

(12)Saoud Razzoukराजनीतिज्ञ हैं

(13)Michel Dardenne राजनीतिज्ञ हैं और Salemपार्टी से सम्बन्ध रखते हैं

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 55 मिनटपर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ तशरीफ़ लाए और मेहमानों ने बारी बारी अपना परिचय करवाया।

*दलबीक के भूतपूर्व मेयर Stephane Plateau ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में निवेदन किया कि जमाअत दलबीक शहर में अच्छी तरह से integrate हो चुकी हैऔर आप लोग बहुत सी activities करते हैं। उन्होंने कहा कि मैं जब हुज़ूर अनवर को देखता हूँ तो अमन महसूस करता हूँऔर मुहब्बत महसूस करता हूँ।

*नगर कौसिल के वर्तमान सदर Mark Cools ने मुलाक़ात के दौरान हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा और कहा कि जमाअत को दूसरे मुसलमानों की तरफ़ से तकालीफ़ पहुँचती हैं , मगर पिछले कुछ सालों में आप लोगों के साथ सम्बन्ध से यह स्पष्ट है कि आप लोग अच्छे मुसलमान हैं क्योंकि आप देस के लिए सेवा करते हैं। जिस में इन्सानियत की सेवा का हक़ अदा करते हैं। कहने लगे कि आपकी मस्जिद जब तामीर होना शुरू हुई तो लोगों में बहुत ख़ौफ़ था। मगर आप लोगों के पड़ोसियों के साथ अच्छे रवैय्ये और सम्बन्धों ने उनकी सोचों को बदल दिया है।

*मैंबर आफ़ फ़लीमश पार्लीमैंट Kris Vandijck साहिब भी इस मीटिंग में शामिल थे। हुज़ूर अनवर से गुफ़्तगु के दौरान उन्होंने निवेदन किया कि क्या हुज़ूर हमें कोई पैग़ाम देना चाहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैंने अभी वही पैग़ाम दिया है कि हमारी जमाअत का असल मक़सद यह है कि इस्लाम का वास्तिवक पैग़ाम और अमन का पैग़ाम दुनिया तक पहुंचाएं।

इस पर महोदय कहने लगे कि मैंने लाहौर की घटना के बाद इस वजह से आपकी जमाअत की मदद की थी कि आपकी जमाअत अमन फैलाती है और एक दूसरे को इज़्ज़त देने की शिक्षा देती है। मैं अपने शहर में भी इस बात को फ़रोग़ देता हूँ कि विभिन्न तन्ज़ीमों, Cultures और रस्मों पर अमल करने वाले लोगों से मिलकर काम किया जाए और एक दूसरे से परिचय हो और एक दूसरे की इज़्ज़त करें और बतौर क़ौम अगर इज़्ज़त करेंगे तो ही आगे बढ़ेंगे।

*मैंबर आफ़ फैडरल पार्लीमैंटऔर मूल्यन बैक की मेयर Francoise Schepmans ने कहा: मैं आपकी जमाअत को जानती हूँ , अक्सर लोग मुझ से मिलने आते रहते हैं। दलबीक के क्षेत्र में जब दहशतगर्दी की घटना हुई था तो जमाअत का वफ़्द मुझ से मिलने आया था और जमाअत ने इस घटना की कठोर निन्दा की थी। जमाअत ने हर मौक़ा पर हमारा साथ दिया है।

Brusselsमें जो घटनाएं हुई , इस में शामिल होने वाले दहशतगर्दों का महोदया कीcouncil से सम्बन्ध था, इस वजह से मीडीया में उनका नाम काफ़ी बदनाम किया गया था। इस पर हुज़ूर अनवर ने उनसे पूछा कि उन्होंने किस तरह रक्षा की? उन्होंने कहा कि शहर में रहने वाले मुसलमान अक्सर अच्छे हैं। जो लोग देश के ख़िलाफ़ हैं, हुकूमत ने उनको शनाख़्त कर के उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई की है।

उनकी ग़लत-फ़हमियों को दूर करने के लिए जमाअत का वफ़्द भी उनसे मिलने के लिए गया और उन्हें क़ुरआन करीम और हुज़ूर की किताब World Crisis & the Pathway to Peace प्रस्तुत की गई। जब उन्होंने क़ुरआन करीम का तोहफ़ा दिया गया तो वो बहुत जज़बाती हो कर कहने लगीं कि पहली बार किसी ने उनको कुरान करीम फ्रैंच अनुवाद के साथ दिया है।

*Mrs. Live Wernick मैंबर आफ़ यूरोपीयन पार्लीमैंट है। इसी तरह यूरोपियन यूनीयन कमेटी आन इंडस्ट्री,रिसर्च ऐंड अनर्जी की मेम्बर हैं। महोदया ने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा: मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे आज के प्रोग्राम में शामिल होने का मौक़ा मिला है। मैंने आपकी जमाअत के बारे में अपनी

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से बढ़कर तो ख़ुदा तआला का कोई महबूब नहीं। आप हबीबे ख़ुदा हैं लेकिन अल्लाह तआला की बेनियाज़ी और इस के ख़ौफ़ और भय की यह अवस्था है कि अपने बारे में भी फ़रमाते हैं कि मुझे नहीं पता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा। अत: हमारे लिए किस क़दर ख़ौफ़ का स्थान है और कितनी हमें फ़िक्र होनी चाहिए कि नेक-आमाल करें। ख़ुदा तआला की इबादत की तरफ़ ध्यान करें।

हज़रत ज़ैद रज़ि ने कहा कि मैं ज़िंदा बच के आऊँ या ना आऊँ लेकिन यह बहरहाल सच है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे रसूल और नबी हैं।

ये आरंम्भिक मुअल्लमीन जो थे सिंध में भी उन्होंने बड़ी क़ुर्बानी कर के वहां गुज़ारा किया है ख़ुद ही पानी ढोया है। दूर दूर से पानी लेकर आते थे। मिट्टी इकट्ठी की फिर ईंटें बनाएँ और फिर ख़ुद ही अपना रिहायश का कमरा बनाया। कोई मांग जमाअत से नहीं की।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति बदरी सहाबी रसूल हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि और हज़रत वहब बिन साद बिन अबी सरह रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ी अन्हुम की मुबारका सीरत का दिलनशीन तज़किरा।

आदरणीय मलिक मुहम्मद अकरम साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला की वफ़ात पर उनका ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़ जुम्अ: के बाद नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

आदरणीय चौधरी अब्दुल शकूर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला , आदरणीय मलक सालिह मुहम्मद साहिब मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद और आदरणीय मवीशीहे जुमा साहिब आफ़ तनज़ानिया की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जुमा के बाद नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अप्रैल 2019 . स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में मैंने हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन के बारे में बयान करते हुए इस बात पर अपनी बात ख़त्म की थी कि आप जन्नतुल बक़ी में मदफ़ून होने वाले पहले आदमी थे।

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 591 उसमान बिन मज़ऊन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

जन्नतुल बक़ी की बुनियाद और आरम्भ के बारे में जो तफ़सील मिली है वह इस तरह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के मदीना में आने के बाद वहां बहुत से क़ब्रिस्तान थे। यहूदियों के अपने क़ब्रिस्तान हुआ करते थे जबकि अरबों के विभिन्न क़बीलों के अपने अपने क़ब्रिस्तान थे। मदीना तय्यबा चूँकि उस वक़्त विभिन्न इलाक़ों में बंटा हुआ था। इसलिए हर क़बीला अपने ही इलाक़े में खुली जगह पर अपनी लाशों को दफ़ना देता था। क़बा का अलग क़ब्रिस्तान था जो अधिक मशहूर था यद्यपि कि वहां छोटे छोटे कई और क़ब्रिस्तान भी थे। क़बीला बनू ज़फ़र का अपना क़ब्रिस्तान था और बनू सलमा का अपना अलग क़ब्रिस्तान था। अन्य क़ब्रिस्तानों में बनू साइदा का क़ब्रिस्तान था जिसकी जगह बाद में सूक़ुन्नबी (सल.) क़ायम हुआ। जिस जगह पर मस्जिद नबवी तामीर हुई वहां भी ख़जूरों के झुण्ड में चंद मुशरिकीन की क़ब्रें थीं। इन सारे क़ब्रिस्तानों में बक़ीउ अल् ग़रक़द सबसे पुराना और मशहूर क़ब्रिस्तान था। और फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने उसे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान के लिए चुन लिया तो उस के बाद से आज तक उसे एक विशेष और मुमताज़ हैसियत हासिल रही है जो हमेशा रहेगी।

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अबी राफ़े रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम किसी ऐसी जगह की तलाश में थे जहां सिर्फ मुसलमानों की क़ब्रें हूँ और इस उद्देश्य से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने विभिन्न जगहों को देखा भी। जा कर देखा। यह फ़ख़र बक़ीउ अल् ग़रक़द के हिस्से में लिखा था। रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे हुक्म हुआ है कि मैं इस जगह को अर्थात बक़ीअ उल ग़रक़द को चुन लूं। उसे इस दौर में बक़ीउल ख़नजबह कहा जाता था। इस में बेशुमार ग़रक़द के दरख़्त और अपने आप उगने वाली झाड़ियाँ हुआ करती थीं। मच्छरों और अन्य ज़मीन के कीड़ों की इस जगह पर भरमार थी और मच्छर जब इस जगह गंद की वजह से या जंगल की वजह से उड़ते थे तो ऐसा लगता था कि धोएं के बादल छा गए हों।

वहां सबसे पहले जिन को दफ़न किया गया और जैसा कि ज़िक्र हो चुका है वह हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र के सिरहाने एक पत्थर निशानी के तौर पर रख दिया और फ़रमाया यह हमारे अग्रज हैं। उनके बाद जब भी किसी की वफात होती तो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से पूछते कि उन्हें कहाँ दफ़न किया जाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम फ़रमाते कि हमारे अग्रज उस्मान रज़ि बिन मज़ऊन के क़रीब। बक़ीअ अरबी में ऐसी जगह को कहते हैं जहां दरख़्तों की प्रचुरता हों, बहुत अधिक दरख़्त हूँ। मदीना तय्यबा में इस स्थान को बक़ीउल ग़रक़द के नाम से जाना जाने लगा क्योंकि वहां ग़रक़द के दरख़्तों की संख्या बहुत थी। इस के इलावा वहां अन्य अपने आप उगने वाली रेगिस्तानी झाड़ियाँ भी बहुत अधिक संख्या में थीं। उसे जन्नतुल बक़ी भी कहा जाता है। जन्नत के लफ़्ज़ का अरबी में एक मतलब है बाग़ या फ़िरदौस। इसलिए यह जगह अधिकरर अजमी ज़ाइरीन में जन्नतुलबक़ी के नाम से जानी जाती है। अब्दुल हमीद कादरी साहिब हैं उन्होंने यह विस्तार लिखा है। फिर कहते हैं कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अरब प्राय अपने मक़बरों और क़ब्रिस्तानों को जन्नत ही कह कर पुकारते हैं। इस का एक नाम मक़ाबेरुल बक़ी भी है जो देहातियों में अधिक मशहूर है।

(उद्धरित जुस्तजूए मदीना लेखक अब्दुल हमीद कादरी साहिब पृष्ठ 598 प्रकाशन ओरीएंटल पब्लीकेशन्ज़ लाहौर पाकिस्तान 2007 ई)

जो सेहरा के रहने वाले थे, गांव के रहने वाले थे उनमें यह अधिक मशहूर है। हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रज़ि अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब कोई फ़ौत हो जाता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम फ़रमाते उस को आगे हमारे गए हुए बंदों के पास भेज दो। उसमान रज़ि बिन मज़ऊन मेरी उम्मत का क्या ही अच्छा अग्रज था।

(अलमुअजेमुल कबीर लित्तबरानी भाग 12 पृष्ठ 228 हदीस नंबर 13160 दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 2002 ई)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि से रिवायत है कि जब हज़रत उसमान रज़ि की वफ़ात

हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम उनकी लाश के पास आए। आप उन पर तीन बार झुके और सिर उठाया और बुलंद आवाज़ से फ़रमाया हे अबू साइब! अल्लाह तुम से दरगुज़र करे। तुम दुनिया से इस हाल में गए कि दुनिया की किसी चीज़ से मिले हुए नहीं थे।

हज़रत आयशा रज़ि बयान करती हैं कि आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की लाश को चूमा जबकि आप रो रहे थे। इस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम रो रहे थे और आप की दोनों आँखें आंसू बहा रही थीं। हज़रत आयशा रज़ि बयान करती हैं कि आं हुज़ूर ने हज़रत उसमान रज़ि की वफ़ात के बाद आप को चूमा। कहती हैं कि मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के आँसू हज़रत उसमान रज़ि के गाल पर बह रहे थे, इतने अधिक थे कि फिर वे आँसू बह कर हज़रत उसमान रज़ि के गालों पर भी गिरने लगे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के बेटे इब्राहीम ने वफ़ात पाई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। اَلْحِقُ بِالسَّلَفِ الصَّالِحِ عُثْمَانَ ابْنَ مَظْعُوْن नेक बुज़ुर्ग उसमान रज़ि बिन मज़ऊन से जा कर मिल जाओ।

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 591 उसमान बिन मज़ऊन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 303 उसमान बिन मज़ऊन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत उसमान बिन अफ़ान रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और इस पर चार तकबीरें कहीं।

(सुनन इब्न माजा किताबुल जनाइज़ बाब मा फ़ी तकबीरिल जनाज़ अर्बअन हदीस नम्बर1502)

कई लोग कई बार कहते हैं कि तीन से अधिक नहीं हो सकतीं। चार तकबीरें भी हो सकती हैं। मुत्तलिब बयान करते हैं कि जब हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की वफ़ात हुई। उनका जनाज़ा निकाला गया फिर उनको दफ़न किया गया तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने एक आदमी को हुक्म दिया कि वह एक पत्थर लाए। वह पत्थर ना उठा सका, बड़ा भारी पत्थर था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम उस की तरफ़ खड़े हुए, इधर गए । आप ने अपने दोनों हाथ,दोनों बाज़ुओं से कपड़ा ऊपर क्या, अपने बाज़ू की आसतीनें चढ़ाईं, क़मीज़ की आसतीनें चढ़ाईं। मुत्तलिब ने कहा, जिसने यह घटना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से रिवायत की है उसने कहा कि मानो मैं अब भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के दोनों बाज़ुओं की सफ़ेदी देख रहा हूँ। अभी भी मुझे वह घटना बड़ी अच्छी तरह याद है और आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के बाज़ू ख़ूबसूरत थे। इन की सफ़ेदी मुझे नज़र आ रही है जब आप ने उनसे कपड़ा हटाया था, आसतीनें चढ़ाई थीं। फिर आप ने वह पत्थर उठाया और उसे हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन के सिरहाने रख दिया और फ़रमाया में इस निशानी के द्वारा अपने भाई की क़ब्र पहचान लूँगा और मेरे अहल में से जो वफ़ात पाएगा इसे में इस के पास दफ़न करूँगा। सुनन अबी दाऊद का यह हवाला है।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल जनाइज़ा फ़ी जमाउल मौता फ़ी क़ब्र वलक़बर यअलम हदीस 3206)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की वफ़ात से बारे में जो तफ़सील बयान की है इस में से कुछ बातें पेश करता हूँ। आप ,हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि 2 हिज्री की घटनाएं बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि

"इसी साल के आख़िर में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा के लिए मदीने में एक मक़बरा बनाया जिसे जन्नतुलबक़ी कहते थे। इस के बाद सहाबा प्राय उस मक़बरे में दफ़न होते थे। सबसे पहले सहाबी जो इस मक़बरे में दफ़न हुए वह उसमान रज़ि बिन मज़ऊन थे। उस्मान बहुत आरंम्भिक मुसलमानों में से थे और निहायत नेक और आबिद और सूफ़ी तबीयत के आदमी थे। मुसलमान होने के बाद एक बार उन्होंने आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुझे इजाज़त प्रदान फ़रमाएं तो मैं चाहता हूँ कि बिल्कुल दुनिया से विरक्त हो कर और बीवी बच्चों से अलग हो जाऊं ताकि अपनी ज़िन्दगी विशेष रूप से इबादत इलाही के लिए वक़्फ़ कर दूं मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की इजाज़त नहीं दी। इस की तफ़सील भी मैं पिछले ख़ुत्बा में बयान कर चुका हूँ। बहरहाल फिर यह मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ही आगे लिखते हैं कि ......उसमान बिन मज़ऊन की वफ़ात का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम को बहुत सदमा हुआ और रिवायत आती है कि वफ़ात के बाद आप ने उनके माथे को चूमा और इस वक़्त आप की आँखें को रही थीं। उनके दफ़नाए जाने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र के सिरहाने एक पत्थर बतौर निशानी के लगवा दिया और कभी कभी जन्नतुल बक़ी में जाकर उनके लिए दुआ फ़रमाया करते थे। उसमान रज़ि पहले मुहाजिर थे जो मदीना में फ़ौत हुए।

(सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि पृष्ठ 462-463)

हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की वफ़ात पर आप की बीवी ने मर्सिया में लिखा और वह यह कि

يَا عَيْنُ جُوْدِيْ بِدَمْعٍ غَيْرِ مَمْنُوْنِ
عَلٰى رَزِيَّةِ عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنِ
عَلَى امْرِئٍ بَاتَ فِيْ رِضْوَانِ خَالِقِهٖ
طُوْبٰى لَهٗ مِنْ فَقِيْدِ الشَّخْصِ مَدْفُوْنِ
طَابَ الْبَقِيْعُ لَهٗ سُكْنٰى وَ غَرْقَدُهٗ
وَأَشْرَقَتْ اَرْضُهٗ مِنْ بَعْدِ نَعْيَيْنِ
وَأَوْرَثَ الْقَلْبَ حُزْنًا لَا انْقِطَاعَ لَهٗ
حَتّٰى الْمَمَات فَمَا تَرْقٰى لَهٗ شُوْنِيْ

(असदुल ग़ाबह भाग 3 पृष्ठ 591 उसमान बिन मज़ऊन प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

अनुवाद इस का यह है कि हे आँख! उस्मान के दु:ख पर तो ना रुकने वाले आँसू बहा। इस शख़्स की घटना पर जो अपने ख़ालिक़ की रजामंदी में रात व्यतीत करता था। इस के लिए ख़ुशख़बरी हो कि एक उपमा से बढ़ कर आदमी मदफ़ून हो चुका है। बक़ीअ और ग़रक़द अपने इस मकीन से पाकीज़ा हो गया और इस की ज़मीन आप की तदफ़ीन के बाद रोशन हो गई। आप की वफ़ात से दिल को ऐसा सदमा पहुंचा है जो मौत तक कभी ख़त्म ना होने वाला है और मेरी यह हालत ना बदलने वाली है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 495 दारुल फ़िक्र बेरूत)

यह उनकी पत्नी ने अपनी भवानाओं को प्रकट किया है।

हज़रत उम्मे अला जो अंसारी औरतों में से एक औरत थीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से बैअत कर चुकी थीं। उन्होंने बताया कि जब अंसार ने मुहाजरीन के रहने के लिए कुएं डाले तो हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन का ठहरने का क़ुरआ अर्थात ठहरने की जगह हमारे नाम निकला कि हम अपने घर ठहराएँ। हज़रत उम्मे अला कहती थीं कि हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन हमारे पास रहे। वह बीमार हुए तो हमने उनकी सेवा की और जब वह फ़ौत हो गए और हमने उन्हें उनके कपड़ों में ही दफ़नाया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम हमारे पास आए। मैंने कहा अर्थात हज़रत उम्मे अला कहती हैं कि मैंने कहा कि अल्लाह की रहमत हो तुम पर अबू साइब! यह उनकी, हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की कुनिय्यत थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के सामने उन्होंने, हज़रत उम्मे अला ने ये श्बद दुहराए कि अल्लाह की रहमत हो तुम पर अबू साइब! मेरी गवाही तो तुम्हारे बारे में यही है कि अल्लाह ने तुझे ज़रूर इज़्ज़त बख़शी है। यह शब्द उन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के सामने दोहराए कि मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह ने तुम्हें ज़रूर इज़्ज़त बख़शी है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने जब यह बात सुनी तो उन से पूछा, कहती हैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने मुझ से पूछा कि तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने उसे ज़रूर इज़्ज़त प्रदान की है। तो कहती हैं मैंने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान। मैं नहीं जानती, मुझे यह तो नहीं पता लेकिन बहरहाल मेरी भवानाएं थी मैंने प्रकट कर दिया। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जहां तक उसमान रज़ि का सम्बन्ध है तो वह अब फ़ौत हो गए और मैं उनके लिए बेहतरी की ही उम्मीद रखता हूँ। यही उम्मीद रखता हूँ कि अल्लाह तआला ज़रूर उनको

इज़्ज़त बख़्शेगा लेकिन अल्लाह की क़सम! आप ने यह भी फ़रमाया कि अल्लाह की क़स्म! मैं भी नहीं जानता कि उसमान रज़ि के साथ क्या होगा। दुआ तो ज़रूर है लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि उन्हें ज़रूर इज़्ज़त बख़शी है हालाँकि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। यह सुनकर हज़रत उम्मे अला ने कहा अल्लाह की कसम उस के बाद मैं किसी को भी इस तरह पाक नहीं ठहराऊंगी। इस तरह के शब्द नहीं दुहराऊंगी कि ज़रूर बख़्शा गया और मुझे इस बात ने दुखी कर दिया। कहती थीं कि मैं सौ गई। इसी ग़म में मैं सौ गई, एक विशेष सम्बन्ध था। भवानाएं भी थीं। तो बहरहाल कहती हैं जब मैं रात को सोई तो मुझे ख़्वाब में हज़रत उस्मान रज़ि का एक चश्मा दिखाया गया जो बह रहा था। पानी का एक चश्मा था वह बह रहा था और यह दिखाया गया कि यह हज़रत उस्मान रज़ि का चश्मा है। इस ख़्वाब के देखने के बाद कहती हैं मैं फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम के पास आई और मैंने आप को यह बताया कि मैंने इस तरह ख़्वाब देखी है तो आप ने फ़रमाया यह उस के कर्म हैं।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल शहादात बाब अलक़रा फ़िल मुशकेलात हदीस 2687)

यह चश्मा जो बह रहा था तो अब अल्लाह तआला ने तुम्हें दिखा दिया कि वह जन्नत में है और यह उस के कर्म हैं जिसके चश्मे अब वहां बह रहे हैं। अत: यह भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की तरबीयत का एक तरीक़ा था कि इसी तरह इतने विश्वास से अल्लाह तआला की बख़्शिश के बारे में गवाही ना दे दिया करो। हाँ जब ख़्वाब में हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन के उच्च कर्म एक चश्मे के रूप में हज़रत उम्मे अला को दिखाए गए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने इस की पुष्टि फ़रमाई। वरना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम तो जानते थे कि इन बदरी सहाबा से ख़ुदा तआला राज़ी हुआ है और ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की दुआएं और आप के बारे में जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने अपनी भवानाओं का इज़हार फ़रमाया वह स्पष्ट करता है कि आप को उनके बारे में यक़ीन था कि अल्लाह तआला वे दुआएं सुनेगा और वे अल्लाह तआला का क़ुरब पाने वाले होंगे लेकिन फिर भी आप ने कहा तुम किसी के बारे में गवाही नहीं दे सकते।

मस्नद अहमद बिन हंबल में यह विषय कुछ इस तरह वर्णन है कि ख़ारजह बिन ज़ैद अपनी माता से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि हज़रत उसमान रज़ि बिन मज़ऊन की जब वफ़ात हुई तो ख़ारिजा बिन ज़ैद की माता ने कहा अबू साइब! तुम पाक हो। तुम्हारे अच्छे दिन बहुत अच्छे थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने इस को सुन लिया और फ़रमाया यह कौन है? उन्होंने कहा मैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें क्या चीज़ बताती है? मैंने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम !उसमान रज़ि बिन मज़ऊन अर्थात उनके कर्म और उनकी इबादतें ऐसी थीं। यही चीज़ें मुझे ज़ाहिर करती हैं कि ज़रूर अल्लाह तआला ने उनसे मग़फ़िरत का सुलूक कर दिया, बख़्श दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हम ने उसमान रज़ि बिन मज़ऊन में भलाई के सिवा कुछ नहीं देखा। निसन्देह उसमान रज़ि बिन मज़ऊन ऐसा शख़्स था कि भलाई के सिवा मैंने इस में कुछ नहीं देखा लेकिन साथ ही आप ने फ़रमाया कि और यह भी याद रखो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ लेकिन अल्लाह की कसम मैं भी नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 8 पृष्ठ 872 हदीस उम्मे अला अनसारी, हदीस नंबर 28006 आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से बढ़कर तो ख़ुदा तआला का कोई महबूब नहीं। आप हबीबे ख़ुदा हैं लेकिन अल्लाह तआला की बेनियाज़ी और इस के ख़ौफ़ और भय की यह अवस्था है कि अपने बारे में भी फ़रमाते हैं कि मुझे नहीं पिता कि मेरे साथ क्या-किया जाएगा। अत: हमारे लिए किस क़दर ख़ौफ़ का स्थान है और किस क़दर हमें फ़िक्र होनी चाहिए कि नेक कर्म करें। ख़ुदा तआला की इबादत की तरफ़ ध्यान करें और इस के बावजूद इस बात पर गर्व नहीं बल्कि विनम्रता में बढ़ते चले जाएं और इस से हमेशा अल्लाह तआला का रहम और इस के फ़ज़ल की भीख मांगते रहें कि वह अपने रहम और फ़ज़ल से हमें बख़्श दे।

मस्नद अहमद बिन हंबल की एक और रिवायत में दर्ज है कि हज़रत उम्मे अला कहती हैं कि हमारे हाँ उसमान रज़ि बिन मज़ऊन बीमार हो गए। हमने उनकी तीमारदारी की यहां तक कि जब फ़ौत हो गए तो हमने उनको उनके कपड़ों में लपेट दिया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम हमारे यहाँ तशरीफ़ लाए। मैंने कहा हे अबू साइब! अल्लाह की रहमत आप पर हो। यह मेरी आप पर गवाही है कि अल्लाह ने आप का सम्मान किया है, बहुत इज़्ज़त दी है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें क्या पता कि अल्लाह तआला ने इस का सम्मान किया है? कहती हैं मुझे नहीं पता मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जहां तक उस का सम्बन्ध है इस को वह यक़ीनी बुलावा अर्थात मौत उस के रब की तरफ़ से आ गई है और मैं इस के लिए ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ कि अल्लाह तआला उस के साथ ख़ैर का मामला करेगा लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं भी नहीं जानता मैं अल्लाह का रसूल हूँ कि मेरे साथ क्या-किया जाएगा। वह कहती हैं कि मैंने कहा मैं इस के बाद किसी को पाक नहीं क़रार दूँगी लेकिन इस के बाद इस बात ने मुझे दुखी किया फिर उसी ख़्वाब का ज़िक्र किया। फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम को ख़्वाब सुनाई।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 8 पृष्ठ 871-872 हदीस उम्मे अला अनसारी, हदीस नंबर 28004 आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

तो पहली दो विभिन्न किताबों में, हदीसों में इस घटना को लिखा गया है। अल्लाह तआला ने उनके स्तर तो बुलंद किए ही हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की दुआएं भी थीं और हमेशा बुलंद फ़रमाता चला जाए और वे नेक नमूने हम लोग भी अपने अंदर क़ायम करने वाले हूँ।

अगले सहाबी जो हैं जिनका ज़िक्र होगा वह हज़रत वहब बिन सअद बिन अबी सरह रज़ि। हज़रत वहब रज़ि के पिता का नाम सअद था। उनका सम्बन्ध क़बीला बनू आमिर बिन लुई से था। आप अब्दुल्लाह बिन साद बिन अबी सिरा के भाई थे। आपकी माता का नाम महुअनह बिन्त जाबिर था जो अशअरी क़बीला से थीं।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 217,वहब बिन सअद, दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1996 ई)

हज़रत वहब रज़ि का भाई अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सिरह वही कातिब वही था जो मुर्तद हो गया था। उनके भाई के बारे में इस घटना का विस्तार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इस तरह बयान की है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम का एक कातिबे वह्य था जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन अबी सिरह था और सीरत अल्हल्बिया में लिखा है कि यह हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि का दूध भाई था। बहरहाल फिर आप लिखते हैं कि आप पर जब कोई वह्य नाज़िल होती तो उसे बुलवा कर लिखवा देते थे। एक दिन आप सूरत अल मोमिनीन की आयत 14 और 15 लिखवा रहे थे। जब आप यहां पहुंचे कि ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ तो यह जो कातिब वह्य था उस के मुँह से अपने आप निकल गया कि فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ। सूरत अलमोमेनोन की आयत 15 में इस का ज़िक्र है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यही वह्य है इस को लिख लो। इस बद-बख़्त को यह ख़्याल ना आया कि पिछली आयतों के नतीजे में यह आयत कुदरती रूप से आप ही बन जाती है। उसने समझा कि जिस तरह मेरे मुँह से यह आयत निकली और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने इस को वह्य क़रार दे दिया है इसी तरह आप नऊज़ बिल्लाह ख़ुद सारा क़ुरआन बना रहे हैं। अत: वह मुर्तद हो गया और मक्का चला गया। फ़तह मक्का के मौक़ा पर जिन लोगों को क़त्ल करने का रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था उनमें एक अब्दुल्लाह बिन अबी सिरह भी था मगर हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने उसे पनाह दे दी। और इस पनाह की तफ़सील यह है कि फ़तह मक्का के मौक़ा पर जब अब्दुल्लाह बिन अबी सिरह को मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने इस को क़त्ल का हुक्म दिया है तो यह अपने दूध भाई हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि के पास उनकी पनाह लेने चला गया और उनसे कहने लगा कि हे भाई इस से पहले कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम मेरी गर्दन मारें मुझे उनसे अमान दिलवा दो। सीरत अलहलबीय: में यह लिखा है। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि लिखते हैं कि वह आप के घर में तीन चार दिन छिपा रहा। एक दिन जबकि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम मक्का के लोगों से बैअत ले रहे थे तो हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो अब्दुल्लाह

बिन अबी सिरह को भी आपकी सेवा में ले गए और इस की बैअत क़बूल करने की दरख़ास्त की। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने पहले तो कुछ देर ताम्मुल फ़रमाया मगर फिर आप ने इस की बैअत ले ली और इस तरह दुबारा उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 139) (अस्सीरतुल हलबीयह भाग 3 पृष्ठ 130 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी फ़तह मक्का, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

और भी इस की बहुत सारी बातें थीं जिसकी वजह से, फ़ित्ना और फ़साद की वजह से और भड़काने की वजह से भी यह हुक्म दिया गया था। सिर्फ एक ही वजह नहीं थी कि यह मुर्तद हो गया था इसलिए क़त्ल का हुक्म दे दिया।

आसिम बिन उम्र बयान करते हैं कि जब हज़रत वहब रज़ि ने मक्का से मदीनै की तरफ़ हिजरत की तो आप ने हज़रत कुलसूम बिन हदम के यहाँ निवास किया। हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने हज़रत वहब रज़ि और हज़रत सुवैद बिन अमर के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया अर्थात ये दोनों भाई बने थे। आप दोनों जंग मौता के दिन शहीद हुए। हज़रत वहब रज़ि जंग बदर, उहद, ख़ंदक़ और हुदैबिया और ख़ैबर में शरीक हुए और आप जमादी अल्ऊला 8 हिज्री में जंग मौता में शहीद हुए। शहादत के रोज़ आपओ की उम्र 40 साल थी।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा भाग 3 पृष्ठ 217,वहब बिन सअद, दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1996 ई)

जंग मौता क्या थी या उस के क्या कारण थे? इस का तबक़ाते अल्कुबरा में कुछ ज़िक्र है। ये जंग जमादी अल्ऊला सन 8 हिज्री में हुई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिस बिन उमैर रज़ि को क़ासिद बना कर शाह बुसुरा के पास ख़त देकर भेजा। जब वह मौत के स्थान पर उतरे तो उन्हें शुरहबील बिन अम्रो ग़स्सअनी, (शुरहबील जो था वो सीरत अल्हलबिया के अनुसार क़ैसर के शाम पर निर्धारित किए गए अमीरों में से एक था,उसने रोका और उनको शहीद कर दिया। हज़रत हारिस बिन अमीर रज़ि के इलावा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम का और कोई राजदूत शहीद नहीं किया गया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना पहुंची तो आप को यह बहुत बुरा लगा। इस का बहुत अफ़सोस हुआ। आप ने लोगों को जंग के लिए बुलाया। लोग जमा हो गए। उनकी तादाद तीन हज़ार थी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन सब के अमीर हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि हैं और एक सफ़ेद झंडा तैयार कर के हज़रत ज़ैद रज़ि को देते हुए यह नसीहत की कि हज़रत हारिस बिन अमीर रज़ि जहां शहीद किए गए हैं वहां पहुंच कर लोगों को इस्लाम की दावत दें अगर वो क़बूल कर लें तो ठीक है। नहीं तो उनके ख़िलाफ़ अल्लाह तआला से मदद मांगें और उनसे जंग करें।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 314 सरिया मौता दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी 1996 ई)(अस्सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 96 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी ग़ज़वा मौता, प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इिलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत वहब रज़ि भी इस जंग में शामिल थे। इस जंग का अधिक विस्तार वर्णन कर देता हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने सरिया मौता के लिए हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि को अमीर निर्धारित फ़रमाया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर ज़ैद रज़ि शहीद हो जाएं तो जाफ़र रज़ि अमीर होंगे और अगर जाफ़र रज़ि भी शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह बिन रौअहह रज़ि तुम्हारे अमीर होंगे। इस लश्कर को जैश उमरा भी कहते थे।

(सही अल्बख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4261)(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 505 हदीस 22918 मस्नद अबू क़तादा अंसारी प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

इस के विस्तार में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इतना ही लिखा है कि एक रिवायत में यह भी है कि इस वक़्त वहां क़रीब एक यहूदी भी बैठा था। उसने जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की बात सुनी तो हज़रत ज़ैद रज़ि के पास आया और आकर कहा कि अगर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम सच्चे हैं तो तुम तीनों में से कोई भी ज़िन्दा बच के वापस नहीं आएगा। इस पर हज़रत ज़ैद रज़ि ने कहा कि मैं ज़िन्दा बच के आऊँ या ना आऊँ लेकिन ये बहरहाल सच है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे रसूल और नबी हैं।

(उद्धरित फ़रीज़ा तब्लीग़ और अहमदी ख़वातीन, अनवारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 405-406)

इस जंग के हालात की,शहीदों की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम को ख़बर अल्लाह तआला की तरफ़ से हुई। इस बारे में एक रिवायत है हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़ैद रज़ि ने झंडा लिया और वह शहीद हुए। फिर जाफ़र रज़ि ने उसे पकड़ा और वह भी शहीद हो गए। फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहह रज़ि ने झंडे को पकड़ा और वह भी शहीद हो गए। ये ख़बर देते हुए आं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू बह रहे थे। फिर आप ने फ़रमाया कि फिर झंडे को ख़ालिद बिन वलीद ने बग़ैर सरदार होने के पकड़ा और उन्हें फ़तह हासिल हुई।

(सही अल्बुख़ारी किताबुल जनाइज़ बाब अर्रजल यनआ अहलल मैयत बिनफ़सहो हदीस 1246)

अल्लाह तआला इन सहाबा के दर्जात बुलंद से बलंद करता चला जाए।

उनके ज़िक्र के बाद अब मैं कई मरहूमीन का ज़िक्र करूँगा जिनके आज जनाज़े भी पढ़ाऊंगा।

पहला ज़िक्र तो आदरणीय मलिक मुहम्मद अकरम साहिब का है जो मुरब्बी सिलसिला थे और कल 25 अप्रैल को मान्चेस्टर में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैह राजेऊन। उनका जनाज़ा यहां हाज़िर है और नमाज़ के बाद में इंशा अल्लाह बाहर जा कर उनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

2फरवरी 1947 ई को यह मुलकवाल ज़िला गुजरात में पैदा हुए थे और 1961 ई में उन्होंने ख़ुद बैअत की। जमाअत में शामिल हुए। उनके बड़े भाई मास्टर आज़म साहिब पहले अहमदी थे। उन्होंने भी ख़ुद बैअत की थी। उनके माध्यम से उन्होंने भी बैअत कर ली। उन्होंने एक मज़मून लिखा था। मुझे याद है इस में यही लिखा था कि मैं रब्वह तालीम हासिल करने के लिए आया और रब्वह के माहौल से प्रभावित हुआ और फिर उस के बाद बैअत भी कर ली। बहरहाल 1962 ई में उन्होंने अपने आपको बैअत के बाद जमाअत के लिए वक़्फ़ किया। बी ए करने के बाद शाहिद और अरबी फ़ाज़िल की डिग्री उन्होंने हासिल की। उनका तक़र्रुर 1971 ई में बतौर मुरब्बी सिलसिला हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने उनका निकाह 1970 ई में अमतुल करीम साहिबा जो मौलवी अबुल बिशारत अब्दुलग़फ़ूर साहिब की बेटी हैं उन से पढ़ाया। यह पाकिस्तान में विभिन्न इलाक़ों में और फिर बाहरी देशों में भी सेवा की तौफ़ीक़ पाते रहे। यू.के में ऑक्सफ़ोर्ड (Oxford),मानचेस्टर (Manchester), ग्लास्गो (Glasgow) और कार्डिफ (Cardiff) की जमाअतों में तीस साल तक सेवा की तौफ़ीक़ मिली। उनका कुल सेवा का समय 48 साल बनता है। यूके में कई साल यह नायब अफ़्सर जलसा गाह भी रहे। 71 से 73 तक पाकिस्तान में यह विभिन्न जगहों पर रहे। फिर 73 से 77 तक गेम्बिया में रहे। फिर दुबारा 77 से 79 तक कराची पाकिस्तान में रहे। फिर 79 ई से 80 ई तक रब्वह मर्कज़ में वकालत तब्शीर में रहे। 80 से 83 तक नाईजीरिया मिशनरी कॉलेज इलारो के प्रिंसिपल रहे। फिर यह वापस रब्वह आए और 89 तक (eighty nine तक) यह रबोह में रहे। फिर यह 89 ई से 2018 ई तक यूके में सेवा की तौफ़ीक़ पाते रहे। पहले तो यह अपनी उम्र के लिहाज़ से फरवरी 2007 ई में रिटायर्ड हुए। इस के बाद दुबारा री एंप्लॉई हुए और 2018 ई तक उनको सेवा की तौफ़ीक़ मिलती रही। वक़्फ़-ए-ज़िंदगी तो वक़्फ़ ही रहता है लेकिन बहरहाल पिच्छले दिनों बीमारी की वजह से फिर एक्टिव (active) सेवा नहीं दे सके और इस तरह उनकी रिटायरमैंट हुई थी लेकिन हम यही कह सकते हैं कि उन्होंने इस तरह चंद महीने ही बग़ैर बाक़ायदा सेवा के गुज़ारे और एक लिहाज़ से सेवा करते हुए उन्होंने अपनी जान दी।

अमीर साहिब यू के लिखते हैं कि बड़े मेहनती और इताअत करने वाले थे। मिज़ाज बहुत धैर्य वाला था। जो भी जमात की सेवा उनके सपुर्द की जाती बड़ी मेहनत और दियानतदारी के साथ देते और उनको फ़ौरी तौर पर रिपोर्ट भी करने की आदत थी, फिर रिपोर्ट करते। मानचेस्टर में थे तो मस्जिद दारुल अमान की तामीर हुई है। मलिक साहिब ने इस मस्जिद के लिए फ़ंड इकट्ठा करने में बहुत प्रमुख किरदार अदा किया है।

अताउल मुजीब राशिद साहिब कहते हैं कि अकरम साहिब बहुत अच्छे आचरण और ख़ूबियों के मालिक थे। बहुत नेक, दयानतदार, बहुत मुख़लिस और फ़िदाई अहमदी थे। जोश वाले मुबल्लिग़, ज़िम्मेदारी से काम करने वाले, ख़िलाफ़त की

इताअत में बहुत उच्च स्थान रखने वाले सिलसिला के सेवक थे। मजीद स्यालकोटी साहिब लिखते हैं कि बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। सबसे स्पष्ट यह कि वह ख़िलाफ़त के वफ़ादार ख़ादिम थे। तब्लीग़ का उनको बहुत अधिक शौक़ था और स्यालकोटी साहिब कहते हैं कि हमारे छात्र जीवन के ज़माने में जब पढ़ते थे तो उस वक़्त भी छुट्टीयों में हमारे गांव एक बार आए फिर वहां भी उन्होंने कहा तब्लीग़ करें और फिर तब्लीग़ में व्यस्त हो गए और ख़ुद्दाम तथा अंसार के तहत सेवा करने के लिए अपनी छुट्टियां, रुख़्सतें जो थीं उनको वक़्फ़ किया हुआ था और हमेशा बड़ी इताअत से उन्होंने ज़िन्दगी गुज़ारी। असलम ख़ालिद साहिब जो प्राइवेट सैक्रेटरी लंदन में सेवा करने रहे हैं वह कहते हैं मेरे यह अज़ीज़ रिश्तेदार भी बाद में बन गए। उनकी शादी की वजह से ससुराली रिश्तेदार थे। फिर यह लिखते हैं कि जहां-जहां आपकी तक़र्रुरी हुई बड़े प्यार से जमाअत के लोगों के दिल जीते और बीमारी में भी जहां-जहां उन्होंने सेवा की खासतौर पर मानचेस्टर के लोगों का बड़ी मुहब्बत से ज़िक्र किया करते थे। जमाअत के बच्चों से, नौजवानों से भी बड़ी शफ़क़त का सम्बन्ध था। इस का एक उदाहरण देते हुए असलम ख़ालिद साहिब कहते हैं कि मुझे बताया कि वह बच्चे जो अब जवान हो चुके हैं और उनकी शादियां हो चुकी हैं इन में से एक बच्चे ने अपनी शादी के बाद जब पहला बच्चा पैदा हुआ तो रात को अढ़ाई तीन बजे मुझे फ़ोन कर के बताया कि मुरब्बी साहिब मेरे यहाँ बेटा पैदा हुआ है। अक़रम साहिब कहते हैं पहले मुझे दिल में ख़्याल आया कि रात को सूचना देने का यह कौन सा वक़्त है। सुबह भी बता सकता था लेकिन इस बच्चे की अपने मिशनरी से, मुबल्लिग़ से, तरबीयत करने वाले से जो मुहब्बत थी कहते हैं कि अगले वाक्य में उसने मेरा मुँह-बंद करवा दिया और इस लड़के ने कहा कि मुरब्बी साहिब मैंने यह वादा किया था कि जब भी अल्लाह तआला मुझे बच्चा देगा तो सबसे पहले आपको बताऊँगा। अब आपको बता दिया है। अब अपने पिता को सूचना दूंगा। तो लोगों का उनके साथ और उनका भी जमाअत के लोगों के साथ यह प्यार था मुहब्बत थी। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा फ़रमाता चला जाए। मग़फ़िरत फ़रमाए। उनके पीछे रहने वालों को सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए। यह तो उन का तो जनाज़ा हाज़िर है जैसा कि मैंने कहा अभी नमाज़ के बाद में बाहर जा कर पढ़ाऊंगा।

दूसरा जनाज़ा ग़ायब है जो चौधरी अब्दुल शकूर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला का है। यह चौधरी अब्दुल अज़ीज़ साहिब स्यालकोटी के बेटे थे। 12 अप्रैल को उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहे राजेऊन। यह 10 नवंबर 1935 ई को पैदा हुए थे। पैदाइशी अहमदी थे। उनके दादा ने 1901 ई में बैअत की थी। आदरणीय अब्दुल शकूर साहिब ने एफ़ ए किया। फिर शाहिद किया। मौलवी फ़ाज़िल किया और जून 1956 में ज़िन्दगी वक़्फ़ की। इस से पहले रेलवे डिवीज़न में बतौर टाइपिस्ट क्लर्क काम कर रहे थे। 1962 ई में मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास किया और 1963 ई में जामिया अहमदिया से शाहिद की परीक्षा पास की। जुलाई 1963 ई से आपका तक़र्रुर वकालत माल सानी में हुआ फिर रब्वह के विभिन्न दफ़्तरों में सेवा सरअंजाम देते रहे। 64 ई में तब्लीग़ इस्लाम के उद्देश्य से सेरियलोन भिजवाया गया। नवंबर 68 ई तक वहां सेवा की तौफ़ीक़ पाई। दिसंबर 70-ए-से दिसंबर 73-ए-तक घाना में रहे। 75ए- से 1978-ए-तक गीमबया में रहे। फरवरी 1980-ए-से अप्रैल 1986-ए-तक लाइबेरिया मैं सेवा की तौफ़ीक़ पाई। इन देशों में महोदय ने बतौर अमीर और मिशनरी इंचार्ज सेवा की तौफ़ीक़ पाई। 1990 ई में आपका तक़र्रुर नायब वकीलुल तबशीर के तौर पर हुआ। नायब वकीलुल माल सालिस, सैक्रेटरी कमेटी आबादी, नायब वकीलुल माल सानी के तौर पर भी सेवा करते रहे और 1995 ई में रिटायरमैंट के बाद 2004 ई तक बतौर रीअंप्लॉई सेवा की तौफ़ीक़ पाई। आँखों में तकलीफ़ की वजह से, काले मोतिया की वजह से फिर 2004 ई में यह रिटायर्ड हुए थे।

उनके बेटे डाक्टर अब्दुल सबूर साहिब जो अमरीका में रहते हैं कहते हैं कि मेरे पिता निहायत सादा और मेहनती थे। हमें लाइबेरिया में बतौर अमीर मिशनरी इंचार्ज उनको तब्लीग़ी और तर्बीयती कामों में व्यस्त देखने का मौक़ा मिला। हमेशा बहुत मेहनत से ख़ुत्बों की तैयारी करते। क़ुरआन करीम , हदीस , सिलसिले की किताबें और बाइबल इत्यादि से हवाले निकाल कर बहुत उत्तम ख़ुत्बा देते। ईसाइयत और मुसलमानों को दलीलों के साथ तब्लीग़ करते थे और बड़े प्यार से बात करते थे। फिर यह कहते हैं कि हम सब बहन भाईयों की तालीम के सारे खर्च अपने सीमित संसाधनों में पूरे किए और हम सबको उच्च शिक्षा दिलवाई।

महमूद ताहिर साहिब जो पाकिस्तान में अंसारुल्लाह के क़ायद उमूमी हैं। कहते हैं बड़े ख़ामोश सेवा करने वाले थे। काम से काम रखते थे और बहुत अच्छा परामर्श देने वाले थे। नायब वकीलुल तबशीर शेख़ हारिस साहिब हैं वह कहते हैं कि बड़े विनम्र मिज़ाज थे। शरीफ़ थे। साफ तबीयत के मालिक थे। ख़िलाफ़त और सिलसिला के निहायत वफ़ादार और फ़िदाई थे। हैदर अली ज़फ़र साहिब जो आजकल जर्मनी के नायब अमीर हैं वह कहते हैं कि अब्दुल शकूर साहिब बहुत ख़ूबियों के मालिक थे। बड़े मुख़लिस, सादा, मिनम्र मिज़ाज, मेहनती, जमाअत के मालों को बड़ी सावधानी से ख़र्च करते थे। एक मुत्तक़ी और नियम वाले आदमी थे। जमाअत की बुक शाप को जो लाइबेरिया में थी बहुत उम्दगी से इस को चलाया और इस से जो आय हुई इस से मस्जिद और मुरब्बी हाऊस पुन: बनवाया। थोड़ी सी जगह में एक छोटा सा कम्पलेकस बना दिया जिस में लाइब्रेरी भी थी। मेहमान ख़ाना भी था। मर्दों और औरतों के लिए मस्जिद में अलग अलग हिस्से थे। मुरब्बी हाऊस भी था और मस्जिद की तामीर के समय ख़ुद अपने हाथ से मज़दूरों के साथ भी काम करते रहे। एक तो ख़ुद आय पैदा कर के मस्जिद बनाई ,कम्पलेकस बनाया। फिर मज़दूरी भी ख़ुद करते रहे। यह हैदर अली साहिब कहते हैं कि 1986 ई में जब मैंने उनसे चार्ज लिया तो वहां उनको अलविदा किया गया और मस्जिद और मिशन हाऊस की तामीर का जब ज़िक्र किया गया कि उन्होंने बड़ी मेहनत से यह सब काम किया है और बड़ा सराहा गया तो उन्होंने बड़ी विनम्रता से कहा कि मुझ से पहले एक मुबल्लिग़ ने यह जगह ख़रीदने की तौफ़ीक़ पाई थी और अल्लाह तआला ने मुझे तौफ़ीक़ दी कि मेरे वक़्त में यह पूर्ण हो गई। अब आप लोग इस में तब्लीग़ी एकटीवीटीज़ (activities) कर सकते हैं और वास्त में तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल हैं जो उसने तौफ़ीक़ दी। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त दो बेटियां और तीन बेटे यादगार छोड़े हैं। अल्लाह तआला उनके स्तर बुलंद फ़रमाए।

तीसरा जनाज़ा जो ग़ायब है वह आदरणीय मलिक सालिह मुहम्मद साहिब मुअल्लिम वक़्फ़ जदीद का है। यह 21 अप्रैल 2019 ई को वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके पड़नाना मलिक अल्लाह बख़्श साहिब रज़ि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे जिन्हों ने चांद सूरज ग्रहण का निशान देखकर लोधरां से पैदल कादियान जा कर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य हासिल किया था। उनके पिता आदरणीय ग़ुलाम मुहम्मद साहिब सिलसिला के आरम्भिक मुअल्लेमीन में से थे। उनके पिता भी मुअल्लिम थे। 1959 ई में उनकी पैदाइश हुई थी। 76 ई में उन्होंने जामिया अहमदिया में दाख़िला लेने की कोशिश की लेकिन उम्र अधिक हो गई थी। दाख़िला नहीं मिल सका। अत: कोटरी में एक मिल में नौकरी कर ली तो उनके बेटे लिखते हैं कि मेरे दादा मलिक ग़ुलाम मुहम्मद साहिब जो मुअल्लिम थे वह उनसे मिलने कोटरी गए तो वहां का माहौल अच्छा नहीं लगा। उन्होंने उनको हिदायत की कि फ़ौरन नौकरी छोड़ दें और वक़्फ़ जदीद के अधीन मुअल्लिम बन के अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ करें। अत: यह नौकरी छोड़कर आ गए। इस वक़्त उनकी शादी भी हो चुकी थी। वहां नौकरी में उनको उस ज़माने में साढ़े चार-सौ रुपए तनख़्वाह मिलती थी और मुअल्लिम क्लास में आकर शामिल हुए। इस के बाद मुअल्लिम बने जहां जमाअत की तरफ़ से 135 रुपए गुज़ारा इलाऊंस होता था लेकिन इस पर भी उनको यह था कि मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान है जो मुझे अल्लाह तआला धर्म की सेवा की तौफ़ीक़ दे रहा है।लगभग 4/1 या 3/1 आय पर समझ लें कि आ कर वक़्फ़ शुरू किया। पहले दुनिया कमा रहे थे। नगर पारकर में उनकी तक़र्रुरी 1989 ई में हुई। बड़े मुश्किल हालात थे। उनके बेटे वह ख़ुद मुरब्बी सिलसिला हैं लिखते हैं कि ख़ाकसार की पिता बयान करती हैं कि जब उनका नगर पारकर के गांव हबा सर सैंटर में तबादला हुआ तो वहां एक लंबे अर्से से मुअल्लिम हाऊस बंद पड़ा था। घर गिर चुका था। अत: पिता जी काफ़ी दूर से दिन को पानी लेकर आते, और मिट्टी इकट्ठे करते और रात को दोनों मियां बीवी मिलकर कच्ची ईंटें बनाते। और जब ईंटें बन गईं तो दोनों ने अपनी मदद आप के अधीन रिहायश का इंतिज़ाम कर लिया। इस जगह रहने की कोई जगह नहीं थी तो यह जो सिंध में भी आरम्भिक मुअल्लेमीन थे उन्होंने बड़ी क़ुर्बानी कर के वहां गुज़ारा किया है। ख़ुद ही पानी ढोया है दूर दूर से पानी लेकर आते थे मिट्टी इकट्ठी की। फिर ईंटें बनाईं और फिर ख़ुद ही अपनी रिहायश का कमरा बनाया। कोई खर्च जमाअत से नहीं किया। यह उनके बेटे ही लिखते हैं कि उन्होंने बताया कि नगर पारकर में उनके पास सविधाएं नहीं

होती थीं। अत: जब मीटिंग पर आते तो अपने लिए महीने का सारा राशन और होम्योपैथी दवाईयां और अन्य सामान ले के आते क्योंकि रीमोट एरिया में रहते थे। एक बार इसी तरह मीटिंग पर आए हुए थे तो वापसी पर रास्ता भूल गए। वहां का बड़ा इलाक़ा बिल्कुल रेगिस्तानी इलाक़ा है और रेत पर चलने के निशानों देखकर आदमी रस्ता की निशानदेही करता था तो यह सही निशानों को पहचान नहीं सके। रस्ता भूल गए और इस दौरान में उनका पानी भी ख़त्म हो गया। सिंध में बड़ी गर्मी होती है। प्यास और थकावट की वजह से आख़िर बेहोश हो कर गिर पड़े और वहीं गिरे हुए थे कि इस दौरान में दो आदमियों का वहां से ऊंट के ऊपर गुज़र हुआ तो उन्होंने देखा कि कोई आदमी रेत पर गिरा हुआ है और जब उनके पास आए तो पता चला कि यह तो डाक्टर साहिब हैं। क्योंकि नगर पारकर में होम्योपैथिक की दवाइयां दिया करते थे इसलिए डाक्टर साहिब के नाम से मशहूर हो गए थे और ये जो दो आदमी थे वे उनके मरीज़ थे। उन्होंने उन्हें पहचान लिया, पानी पिलाया और फिर अपने गांव ले के आए। वहां रात गुज़ारी। अगले दिन उनको सैंटर पर छोड़ के आए। यह लिखते हैं कि अपनी औलाद को नमाज़ की नसीहत किया करते थे। बड़ी बाक़ायदगी से तहज्जुद पढ़ने वाले थे। जिस दिन फ़ौत हुए उस दिन भी तहज्जुद अदा की और माता को भी उठाया। बहुत अच्छे अख़लाक़ और लोगों से मुहब्बत करने वाले थे। कोई बुरा सुलूक भी करता तो हमेशा सब्र करते और कभी जवाब नहीं देते थे। और लोगों से सम्बन्ध बढ़ाने में भी बड़े अच्छे थे और काफ़ी मशहूर थे। लोग ईमानदारी की वजह से उनके पास अमानतें भी रखवा दिया करते थे। कहते हैं कोई भी ख़ानदान में रंजिश होती तो हमेशा सुलह करवाने वाले थे।

मरहूम मूसी भी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा तीन बेटे और तीन बेटियां यादगार छोड़ी हैं। आप के एक बेटे मुबारक अहमद मुनीर साहिब बुर्कीना फासो में मुरब्बी सिलसिला के तौर पर सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और इस वजह से अपने पिता की वफ़ात पर पाकिस्तान भी नहीं जा सके। अल्लाह तआला उनके स्तर बुलंद फ़रमाता चला जाए। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी इस भावना और क़ुर्बानी से धर्म की सेवा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

चौथा जनाज़ा ग़ायब आदरणीय मवीशीहे (Mwishehe) जुमा साहिब का है। यह तंज़ानिया के थे। यह 13 मार्च को वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। यह 1933-1934 मैं तंज़ानिया के रीजन मोरो गुरू (Morogoro)में उनकी पैदाइश हुई। 1967 ई में यह जमअत अहमदिया में शामिल हुए और उनके जमाअत में शामिल होने की घटना इस तरह है कि सुन्नी उल्मा में वहां रिवाज था कि फ़ौत होने वालों का ख़त्म दिलवाने और फ़ौत होने वाले बच्चे का अक़ीक़ा एक ही जगह करने पर उनको मतभेद था कि यह क्या ख़त्म है और फ़ौत होने वाले बच्चे का यह कैसा अक़ीक़ा है। इस पर कहते हैं क्योंकि कई सुन्नी उलमा इस बच्चे का अक़ीक़ा करने को मानते थे जो जल्द फ़ौत हो गया हो ना कि इस बच्चे का जो ज़िन्दा हो ताकि ख़त्म दिलवा कर और अक़ीक़ा कर के बार-बार खाने के सामान पैदा हो सकें। उन्होंने इस्लामी तालीम में तो कोई ऐसी तालीम नहीं देखी थी जिस पर मौलवियों का अमल हो रहा था। तो उस पर उनको बहुत दु:ख हुआ और मुसलमानों की बुरी हालत पर बड़े दुखी रहते थे। अल्लाह तआला से दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह तू हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नाज़िल फ़र्मा ,ताकि वह आकर इस्लाम को दुबारा ज़िन्दा करें। तो मिशनरी इंचार्ज साहिब लिखते हैं कि उनके अपने बयान के अनुसार जब उनकी मुलाक़ात जमीलुर्रहमान रफ़ीक़ साहिब से हुई जो उस वक़्त वहां मुबल्लिग़ सिलसिला थे और आजकल पाकिस्तान में वकीलुल तसनीफ़ हैं तो उन्होंने उन को कहा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की हदीस है कि जिस शख़्स ने अपने वक़्त के इमाम को नहीं पहचाना वह जाहलियत की मौत मरा। इस पर कहते हैं उन्होंने गुमान किया कि मैंने वक़्त के इमाम को नहीं माना इसलिए हक़ीक़ी मुसलमान नहीं हूँ। फ़ौरन ख़्याल आया और फिर बग़ैर वक़्त नष्ट किए, फ़ौरन उन्होंने बैअत कर ली। बैअत के बाद अपने गांव में गए, अपने बहन भाईयों को तब्लीग़ की, ख़ानदान वालों को तब्लीग़ की, दोस्तों को तब्लीग़ की और सबको जमा कर के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम पहुंचाया और इसी साल के दौरान उनके भाई ईदी सलमान साहिब और मुहम्मद जुम्अ: साहिब जो फ़ौत हो चुके हैं और जुम्अ: साहिब की पत्नी शीघ्र उनकी तब्लीग़ से जमाअत में शामिल हो गईं। मरहूम को बहुत कठोर विरोध का भी सामना करना पड़ा लेकिन धीरे-धीरे लोग जमाअत में शामिल होने लगे और उनके गांव मकू योनी (Mkuyuni) के साथ साथ आस पास के जितने भी देहात हैं उनमें जमाअत का बड़ा अच्छा प्रसार हो गया। मिशनरी इंचार्ज लिखते हैं कि अब मकू योनी जमाअत जो है मोरो गुरू (Morogoro) रीजन की एक मिसाली जमाअत है और वह उनकी मेहनत से क़ायम हुई ,हुई जमाअत है।

जमाअत में शामिल होने के बाद वफ़ात तक उनके हर कर्म से यह प्रकट होता था कि ख़िलाफ़त के इंतिहाई शैदाई हैं और मुबल्लग़ीन किराम और जमाअत के ओहदेदारों की भी बड़ी इज़्ज़त और सम्मान किया करते थे। जमाअत के निज़ाम की बड़ी पाबंदी किया करते थे। तब्लीग़ का बड़ा शौक़ और जज़्बा था और हमेशा तब्लीग़ करते रहते ,कोई मौक़ा हाथ से ना जाने देते। चंदों की अदायगी करने वालों में पहली सफ में गिने जाते थे बल्कि हर वक़्त इसी फ़िक्र में रहते थे कि कोई भी आय हो तो चंदा दूं और यह कहा करते थे कि इस अस्थायी दुनिया की कोई हैसियत नहीं है। आप मूसी भी थे और लोगों को इस बरकत वाले निज़ाम में शामिल होने की तहरीक किया करते थे। क़ियाम नमाज़ में भी अपनी मिसाल आप थे। पांचों समय की नमाज़ का इल्तिज़ाम ख़ुद करते। अपने बच्चों और पोतों पोतियों और नवासे नवासियों को भी इस का इल्तिज़ाम करवाने की नसीहत की। तहज्जुद बड़े शौक़ से अदा किया करते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की दुआएं आप को बहुत याद थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें पढ़ने का भी बड़ा शौक़ था। उनके बेटे शमाउन जुमा साहिब जो जामिया अहमदिया तंज़ानिया में उस्ताद हैं कहते हैं कि 1987 ई से 1990 ई के दौरान हम तीन भाई जामिया तंज़ानिया में पढ़ते थे। (मुबश्शिर का कोर्स वहां होता है) और मुझे याद पड़ता है कि एक बार छुट्टियों के दौरान हम भाईयों ने आपस में यह मश्वरा किया कि हम में से एक भाई जामिया की पढ़ाई छोड़कर घर वापिस आ जाए और माता पिता का रोज़मर्रा के कामों में हाथ बटाए और हम ने इस बात का ज़िक्र अपने पिता जी से किया तो उन्होंने उसे सख़्त बुरा मनाया, उनके बेटे शमाउन जुमा साहिब लिखते हैं कि मुझे वह दिन नहीं भूलता कि पिता जी बड़े जलाल में थे और उन्होंने हमें समझाया कि अल्लाह पर भरोसा करो और जामिया की पढ़ाई जारी रखो और पढ़ाई बिलकुल नहीं छोड़नी। उन्होंने अपने तीनों बच्चों में जमाअत की सेवा की एक रूह फूंकी।

अल्लाह तआला उनसे रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद करे और उनकी नस्ल को भी सच्चा धर्म का ख़ादिम और इस्लाम का ख़ादिम बनाए। जैसा कि मैंने कहा है नमाज़ के बाद में इन सब की जनाज़ा अदा करूँगा। एक जनाज़ा हाज़िर मलिक अकरम साहिब का है वह मैं बाहर जा के अदा करूँगा और लोग यहीं मस्जिद के अंदर ही नमाज़ में शामिल हों।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 10 मई 2019 से 9)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

पार्टी के मैंबरान से सुन रखा था। आपकी तरफ़ से दावत मिलने के बाद मैंने मज़ीद तलाश की। आपकी जमाअत को दुनिया में एक अलग स्थान हासिल है। आप इन्सानियत के लिए मुहब्बत , सेवा तथा सहानुभूति के कामों और अमन के पैग़ाम के बारे में से जाने जाते हैं। आपकी जमाअत की बेल्जियम में integrationभी अतुल्नीय है। नए साल के आरम्भ में वक़ारे अमल भी एक अलग प्राजैक्ट है।

मैं बहैसीयत यूरोपियन पार्लयामैंट मैंबर भी अमन की कोशिश में व्यस्त हूँ। हम ने यूरोप में दो बड़ी जंगें देखी हैं। अब हम कोशिश कर रहे हैं कि कोई और जंग हमें ना देखनी पड़े। आपका पैग़ाम उतना मिसाली है कि अगर दुनिया की बड़ी ताक़तें इस पर अमल करें तो दुनिया में अमन क़ायम हो सकता है।आख़िर में में दोबार: आप और आपकी जमाअत का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ और उम्मीद रखती हूँ कि हम अमन की कोशिश जारी रखेंगे।

*एक मेहमान Christian De Coninck साहिब , जो कि बर्सल्ज़ शहर के Chief Police Officerहैं कहने लगे:सबसे पहले मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आपने मुझे अपने प्रोग्राम में शमूलीयत की दावत दी जिसकी मुझे बड़ी ख़ुशी है। जब 22 मार्च2016 ई को बर्सल्ज़ के Malbeek के मेट्रो स्टेशन पर हमला हुआ था तो मैं उस वक़्त वहां इंचार्ज था। मैं ने वह देखा है जो मैं कभी नहीं चाहता कि आप में से कोई भी देखे। लोगों ने मेरे पांव में आकर दम तोड़ा। मुझे मुसलमानों पर बहुत ग़ुस्सा था कि कैसे एक इन्सान मज़हब के नाम पर दूसरे इन्सान का क़त्ल कर सकता है। मगर आपकी जमाअत को जान कर आप लोगों से मिल कर और आज आप के जलसा में शामिल हो कर मेरा मुसलमानों के बारे में नज़रिया बदल गया है। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँकि आपने मुझे दोबारा अमन की राह दिखाई है। आपके नारे Love For All, Hatred For None ने मेरे दिल पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है।

उनके बारे में से मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं :कमिशनर साहिब आज हफ़्ता के रोज़ जलसा गाह में आए तो कहने लगे कि में 30 मिनटके लिए आया हूँ। उन्हें जलसा गाह का विज़ट करवाया गया। Humanity First और बाक़ी स्टॉलज़ दिखाए गए। जमाअत की ख़िदमते ख़लक़ की सेवाओं के बारे में ब्रीफिंग दी गई। बाद में उन्होंने जलसा का सारा सैशन attend किया और तक़रीबन 3 घंटे तक जलसा गाह में हमारे साथ रहे। जाने से पहले उन्होंने इज़हार किया कि मैं आपके जलसा के इस इज्लास में दोबारा आने का इच्छुक हूँ जिस में आपके ख़लीफ़ा मौजूद हूँ। फिर उनको अन्तिम इज्लास में शमूलीयत की दावत दी गई। बाद में उनकी बाक़ी मेहमानों जिनमें विभिन्न शहरों के मेयर और सियासी शख़्सियात मौजूद थीं से मुलाक़ात करवाई। उन्होंने जमाअत की अपने शहरों में ख़िदमतों और integration का उनसे ज़िक्र किया। इस के बाद जमाअत से अपने सम्बन्ध के बारे में बताया। इन समस्त बातों का उन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव हुआ और मुसलमानों के बारे में उनकी सोच सकारात्मक रंग में बदली जिसका इज़हार उन्होंने हुज़ूर से किया।

*मिस्टर दे बूक (मैंबर आफ़ पार्लीमैंटऔर काऊन्सिलर Uccle)ने कहा:मैं आज आप से मिलकर बहुत ख़ुश हूँ क्योंकि आपका पैग़ाम अमन और इन्साफ़ का है और आपका जो माटो है मुहब्बत सब से ,नफ़रत किसी से नहीं, आप किसी भी क़ौम या मुल्क से सम्बन्ध रखने वाले हैं, ये पैग़ाम पूरी दुनिया के लिए है। मेरा ख़्याल है कि हम सबको इस पैग़ाम को फैलाने की कोशिश करनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दे बूक साहिब का शुक्रिया अदा किया।

*बर्सल्ज़ शहर की भूतपूर्व मेयर Miss Souad Razzouk साहिबा ने कहा:मुझे 2009 ई में जलसा सालाना यू.के में शामिल होने का मौक़ा मिला था। आपका जो पैग़ाम है मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं यह पैग़ाम सब के लिए है और इस पैग़ाम को पूरी दुनिया में फैलाना चाहिए। चूँकि आपका पैग़ाम शान्ति का पैग़ाम है इसलिए बहुत से लोग ऐसे हैं जो आप पर ज़ुल्म करते हैं ओर जो आप पर मज़ालिम होते हैं मैं इस को बर्दाश्त नहीं कर सकती और अगर आप लोगों को मदद की ज़रूरत है तो मैं हमेशा मदद करने के लिए तय्यार होंगी क्योंकि आपका पैग़ाम मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं है।

*एक दोस्त Ludwig Vandenhove ने कहा :मेरे लिए यहां आना एक सम्मान की बात है और मेरा ख़्याल है कि जब पिछली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बेल्जियम आए थे तब भी मेरी हुज़ूर से दलबीक में ही मुलाक़ात हुई थी। मैं जमाअत अहमदिया को बड़ी अच्छी तरह जानता हूँ क्योंकि में 18 साल के लिए Sint Truiden शहर का Mayor रह चुका हूं हमारा जमाअत से राबिता हमेशा अच्छा रहा है और आपकी जमाअत का पैग़ाम मुहब्बत सब के लिए ,नफ़रत किसी से नहीं वेस्टर्न यूरोप के लिए और बेल्जियम के लिए बहुत ज़रूरी और अहम पैग़ाम है।

*एक तंज़ीम Blue Hounds Veterans के मैंबर Philip Noers साहिब ने कहा कि :आप हमें जो बातें बता रहे हैं और जो पैग़ाम हम तक पहुंचा रहे हैं, मैं इस की बहुत इज़्ज़त करता हूँ और मेरा ख़्याल है कि हमें इस पैग़ाम को मज़ीद फैलाना चाहिए। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यही पैग़ाम है जो समस्त इन्सानियत के लिए है और ये पैग़ाम आज की ज़रूरत के अनुसार है।

मेहमानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 7 बज कर 35 मिनट पर ख़त्म हुई। आख़िर पर मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

प्रैस कान्फ्रैंस

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले गए जहां प्रोग्राम के अनुसार एक प्रैस कान्फ्रैंस रखी गई थी। इस में विभिन्न इलैक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडीया के प्रतिनिधि मौजूद थे।

*पाकिस्तानी टीवी चैनल न्यूज़ वन और ईरानी टीवी सहर के प्रतिनिधि ने सवाल किया कि यूरोप के अंदर Islamophobiaजिस रफ़्तार से बढ़ रहा है क्या इस बारे में से यूरोप में कोई संयुक्त हिक्मत-ए-अमली अपनाई जा सकती है? दूसरा सवाल यह कि हम तो इस पाकिस्तान को जानते हैं जिसकी पहली केबीनट में सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब वज़ीर-ए-ख़ारजा थे। लेकिन अभी जो वर्तमान में Developहुई है मियां आतिफ़ के बारे में से , तो इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पहली बात तो यह है कि जहां तक Islamophobia का सम्बन्ध है तो जमाअत अहमदिया हर प्लेटफार्म पर यही कहती है कि जो भी उग्रवादी कर रहे हैं, वे ग़लत कर रहे हैं। मुसलमानों की अक्सरीयत ये नहीं चाहती बल्कि इस से नफ़रत का इज़हार करती है। इसलिए हर जगह कोशिश करनी पड़ती है और कोशिश ही है और फिर आपकी जो मस्जिद है और मेम्बर है वहां मौलवियों और मुल्लाओं से कहें कि तुम लोग कोशिश करो कि जो तुम्हारे पास आते हैं बजाय उनको उग्रवादी बनाने कि उनको असल इस्लाम की शिक्षा दो और उनको बताओ कि असल इस्लाम की शिक्षा क्या है और आँ हज़रत का मुक़ाम अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में रहमतुन लिल्आलेमीन बताया है। अल्लाह तआला ख़ुद भी रबुल आलमीन है जो अल्लाह तआला सब जहानों का रब है, सब फ़िर्क़ों का रब है, सब मज़हबों का रब है और आँहज़रत सारे आलमीन के लिए रहमत हैं और आपके ज़माने में रहमत ही फैली , काफ़िरों ने जब हमला किया तो आपने जवाब दिया। ख़ुद से कोई जंग नहीं की। ना आँहज़रत के ज़माने में , ना ख़ुलफ़ाए राशदीन के ज़माने में ऐसी कोई जंग थी जो ख़ुद शुरू की गई हो। दुश्मनों ने मजबूर किया तो जंग हुई।

बाक़ी जहां तक आपका सवाल है या आपका मतलब है कि हम मदद करने के लिए तय्यार हैं तो हम हर जगह ही मदद करने के लिए तय्यार हैं शर्त यह है कि आपके लीडर और आप के मुल्ला इस बात को स्वीकार करने के लिए तय्यार हों कि हम बहैसीयत मुसलमान एक संयुक्त प्लेटफार्म पर खड़े हो कर इस उग्रवाद को ख़त्म करने की कोशिश करें।

दूसरा आपका सवाल आतिफ़ मियां और ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब का तो इमरान ख़ान साहिब ने यह ऐलान किया था कि मैं वह पाकिस्तान बनाना चाहता हूँ और इस मैं वह हुकूमत क़ायम करना चाहता हूँ जो मदीना की हुकूमत थी,तो मदीना का मीसाक़ क्या था? इस में तो यहूदी भी शामिल थे दूसरे मज़ाहिब भी शामिल थे। यहूदियों को उनकी शरीयत के अनुसार Deal किया जाता था और मुसलमानों को क़ुरआन करीम के अनुसार। सब इकट्ठे रहते थे जब तक कि दूसरे मज़हबों की तरफ़ से बग़ावत नहीं हो गई। आँहज़रत ने हर एक से अच्छा सुलूक किया और इसके बाद भी अच्छा सुलूक करते रहे तभी तो मदीना के बहुत सारे यहूदी मुसलमान भी हुए। इमरान ख़ान साहिब ने नारा तो यह लगाया लेकिन जब आतिफ़ मियां का सवाल आया और मुल्ला के प्रेशर का सवाल आया तो डर गए और क़ायदे आज़म की जो vision थी उसके उलट चलना शुरू कर दिया। लेकिन कम से कम यह बात है कि उनके कुछ वज़ीर ऐसे साहस वाले हैं जिन्होंने टीवी पर भी और सोशल मीडीया पर खुल कर यह बात की कि हम आतिफ़ मियां को इस्लामी नज़रियाती कौंसल का मैंबर नहीं बना रहे बल्कि एक

इक़तिसादी advisor मैंबर बना रहे हैं लेकिन इस पर पीर साहिब ने एक फ़तवा दे दिया कि आतिफ़ मियां को मैंबर बनाने की वजह से इमरान ख़ान साहिब उनकी पार्टी के सब मैंबरान, उनकी आमिला और वे समस्त लोग जिन्होंने तहरीक-ए-इंसाफ़ को वोट दिया इन सब के निकाह टूट गए। तो जब ये सोच बन जाए आप ख़ुद ही अंदाज़ा कर लें क्या हो सकता है।

*प्रतिनिधि जंग न्यूज़ ने सवाल किया कि आप अहमदिया कम्यूनिटी के मज़हबी राहनुमा हैं, दूसरी तरफ़ मुसलमानों की अक्सरीयत के मज़हबी राहनुमा भी हैं। हमारे लिए अर्थात आम आदमी के लिए मसला यह है कि वे किस की बात पर यक़ीन करें। जहां मज़हब आ जाता है वहां प्राय आँखें बंद कर ली जाती हैं। इस बारे में से मैं जानना चाहूँगा कि सोसाइटी के अंदर एक निरन्तर टेंशन है। क्या आप इस बारे में से पार्लीमैंट का बनाया हुआ जो क़ानून है इस से मतभेद करते हैं या आपके पास उस के लिए कोई लाहे अमल है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :बात ये है कि हम हर वे काम करते हैं जिसकी अल्लाह और इस के रसूल इजाज़त देते हैं और हुक्म देते हैं। आँहज़रत की एक हदीस है कि जो कहता है ला इलाहा इल्ल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह वह मुसलमान है। जब काफ़िरों से जंग हुई तो एक सहाबी ने विरोधी को क़तल कर दिया और क़तल होने से पहले उसने कह दिया ला-इलाहा इलल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह और यह बात आँहज़रत तक पहुंची तो सहाबी ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह उसने तलवार के ख़ौफ़ से कलिमा पढ़ लिया था। इस पर आपने फ़रमाया कि तुम ने उस का दिल चीर के देखा था? और इस को इतनी बार कहा इतना ग़ुस्से और अफ़सोस का इज़हार किया कि सहाबी ने कहा कि मेरे दल ने कहा कि काश आज से पहले में मुसलमान ही ना होता। अगर तो पाकिस्तान की पार्लीमैंट ने हमारा दिल चीर कर देख लिया है कि हम ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह दिल से कहते हैं या सिर्फ ज़बान से कहते हैं तो फिर उनका मुक़ाम तो रसूलुल्लाह से भी बढ़कर हो गया। उनको तो दिल की ख़बर नहीं थी, उनको दिल की ख़बर हो गई। इसलिए हम कहते हैं कि पार्लीमैंट के हर इस क़ानून की हम पाबंदी करते हैं जो हमें मज़हब से नहीं रोकता। मैं अगर कहता हूँ कि मैं मुसलमान हूँ तो पार्लीमैंट लाख कहे कि तुम मुसलमान नहीं हो तो मैं सख़्तियां बर्दाश्त कर लूँगा लेकिन मैं मुसलमान हूँ। हाँ पाकिस्तान के बाक़ी क़ानूनों का जहां तक सम्बन्ध है तो आप देख लें, हमारे अहमदी क़ानून के पाबंद हैं और क़ानून की आज्ञा पालन करने वाले हैं। तो जहां मज़हब का मामला आ गया इस मज़हब को मैं मानता हूं उस का किसी को नुक़्सान नहीं हो रहा। मैं किसी का माल नहीं लौट रहा, मैं कहीं डाका नहीं डाल रहा, मैं हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत नहीं कर रहा, मैं अपने आपको मुसलमान कहता हूँ और नमाज़ पढ़ता हूँ। इस पर आप मुझे कहते हैं कि नहीं तुम्हें तीन साल की क़ैद है तो ठीक है मैं बर्दाश्त कर लूँगा। इन्ही बातों की वजह से में ख़ुद भी जेल में रहा हूँ , आपने पाकिस्तान की जेल का हाल पूछना है तो वह भी बता सकता हूँ। यह तो अत्यचार पूर्ण क़ानून है जिसको दुनिया का कोई भी sensibleआदमी नहीं मानता और जिन्नाह ने जो पाकिस्तान का तसव्वुर प्रस्तुत किया था इस में मज़हब की आज़ादी थी , हर एक मज़हबी लिहाज़ से आज़ाद था। जिन्नाह की नज़र में यह मज़हब की आज़ादी ही थी जो उन्होंने एक ईसाई को चीफ़ जस्टिस बनाया जज बनाया, कमांडर इन चीफ़ या शायद एयरफ़ोर्स का सरबराह भी ईसाई था, फिर चौधरी सर ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब को वज़ीर-ए--ख़ारजा बनाया। तो ये सारी चीज़ें इस बात का इज़हार करती हैं कि बावजूद उस के कि पाकिस्तान मुसलमानों के लिए एक अलग देश बनाया गया था लेकिन इसी तरह जिस तरह मज़हब की आज़ादी के साथ मदीना की हुकूमत बनी थी। अगर आप ये कहें कि तुम अपने आपको इसलिए ग़ैर मुस्लिम कह दो कि पार्लीमैंट कहती है तो मैं क्यों ख़ुद को ग़ैर मुस्लिम कह दूं जबकि में अल्लाह और इस के रसूल पर यक़ीन करता हूँ। क़ुरआन करीम में भी सूरत निसा में आया कि जो तुम्हें सलाम कहता है तुम उसे यह ना कहो कि तुम मोमिन नहीं हो तो ये जब अल्लाह के हुक्म से टकराने लग जाएं और रसूल के हुक्म से टकराने लग जाएं तो फिर हमने वहां स्टैंड लेना है। हाँ बाक़ी बातों में हम क़ानून के पाबंद हैं और मैं दावे से कहता हूँ कि हमारे जितना कोई भी पाबंद नहीं। आप आबादी के लिहाज़ से किसी भी शहर की प्रतिशत निकाल लें और वहां इंतिज़ामीया से पूछ लें कि अहमदी ज़्यादा क़ानून के पाबंद हैं या दूसरे लोग।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: दुनिया में इन्क़िलाब जो है वह भी इसी वजह से है। मुझे घाना की पार्लीमैंटके एक दोस्त जो कि अहमदी हैं कहने लगे कि हमारी आई जी जेल ख़ाना के साथ मीटिंग हो रही थी और वहां ये सवाल था कि crime बढ़ रहा है और फिर ये जायज़ा लिया गया कि किस स्तर से मुजरिम ज़्यादा हैं तो पता लगा कि मुसलमानों में से हैं। इस पर उन्होंने ने कहा कि मैं अहमदी हूँ और मैं तुम्हें दावे से कहता हूँ कि अहमदी मुसलमान जुर्म नहीं करते। तुम अगली मीटिंग में जायज़ा लेकर बताओ उन मुजरिमों मैं कोई अहमदी भी शामिल है। अगली रिपोर्ट जब आई तो पता चला कि बाक़ी मुसलमान तो हैं लेकिन कोई भी अहमदी नहीं। इन्क़िलाब तो यह है। इस्लाम की सही शिक्षा तो हम प्रस्तुत कर रहे हैं। आप कहते हैं कि तुम अपना नाम ख़ालिद ना रखू, तुम यह कहो कि मैं मुसलमान नहीं हूँ, सलाम ना कहो। अगर कोई ईसाई अस्सलामो अलैकुम कहे तो कोई हर्ज नहीं और अहमदी कह दे तो तीन साल की क़ैद है। यह क़ानून है? यह तो मज़ाक़ है।

*एक पाकिस्तानी पत्रकार ने कहा कि मेरा अक़ीदा यह है कि मैं हर मज़लूम का साथी हूँ और हर ज़ालिम का मुख़ालिफ़ हूँ। आपका जो नारा है कि मुहब्बत सब के लिए , नफ़रत किसी से नहीं तो इस में तो सारे लोग शामिल हो जाते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:बहुत अच्छी बात है। आँहज़रत ने फ़रमाया था कि मज़लूम और ज़ालिम की मदद करो। इस पर सहाबा रज़ि ने पूछा कि ज़ालिम की मदद कैसे कर सकते हैं तो आप ने फ़रमाया कि तुम उस की ज़ुलम रोकने में मदद कर सकते हो। यही वह तरीक़ा है जिस से आप उस के लिए मुहब्बत का इज़हार कर सकते हो और मज़लूम के लिए तो स्पष्ट है कि आप उस की कैसे मदद कर सकते हैं। तो मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं का मतलब है कि जो ज़ालिम हैं, तुम उन के लिए दुआ करो कि वे ख़ुदा की पकड़ से बचे रहें। ये समस्त इन्सानियत के लिए मुहब्बत है और उन लोगों के लिए मुहब्बत जो मज़लूम हैं या आजिज़ हैं या अम्न पसंद हैं कि तुम उन के लिए दुआ करो कि वे ज़ालिमों से बचे रहें। तो मुहब्बत सब के लिए का यह अर्थ है। वर्ना आप सही कहते हैं और आँहज़रत की हदीस के अनुसार मैं भी सही कहता हूँ।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि ज़ालिम का हाथ रोको, इस की मदद करो, उस के लिए दुआ करो। अगर तुम हाथ से नहीं रोक सकते तो ज़बान से रोको , ज़बान से नहीं रोक सकते तो उस के लिए दुआ करो। यह उस के लिए मदद है। हाँ यह ज़रूर है कि हर एक से एक जैसा प्यार नहींहो सकता। प्यार के स्तर बदल जाते हैं। एक बार हज़रत अली रज़ि के बेटे ने उनसे पूछा कि क्या आप को मुझ से प्यार है? उन्होंने फ़रमाया कि है फिर उन्होंने पूछा क्या आपको अल्लाह तआला से भी प्यार है। तो हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया हाँ फिर पूछा कि यह दो प्यार किस तरह इकट्ठे हो सकते हैं। इस पर हज़रत अली रज़ि ने कहा कि जब अल्लाह तआला के प्यार का मामला आएगा तो तुम्हारा प्यार पीछे हो जाएगा। तो इसी तरह ज़ालिम से इस वक़्त तक प्यार है जब तक मज़लूम सामने ना हो। जब मज़लूम सामने आ जाएगा तो इस से प्यार होगा और ज़ालिम से हमदर्दी की मांग यह है कि इस को अल्लाह की पकड़ से बचाओ।

यह प्रैस कान्फ्रैंस सवा आठ बजे तक जारी रही। आख़िर पर प्रैस के मैंबरान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मार्की में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

जलसा सालाना बेल्जियम का तीसरा दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजे मार्की में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ू अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ू अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न कामों के बारे में दफ़्तरी मामलों को पूरा किया। आज जमाअत अहमदिया बेल्जियम के जलसा सालाना का तीसरा और आख़िरी रोज़ था। प्रोग्राम के अनुसार 3 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जलसा गाह तशरीफ़ लाए और नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई।

जलसा सालाना बेल्जियम का समापन आयोजन

नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जलसा के समापन इजलास के लिए ज़ूंही स्टेज पर तशरीफ़ लाए तो सारा जलसा गाह जोशीले नारों से गूंज उठा और लोगों ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद किए। प्रोग्राम के आरम्भ से पहले दो मेहमानों ने अपने विचारों का इज़हार करना था।

*सबसे पहले मैंबर यूरोपीय पार्लमैंट Mrs. Lieve Wicrinck ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। महोदया यूरोपियन कमेटी इंडस्ट्री, रिसर्च ऐंड एनर्जी की मैंबर भी हैं। महोदया ने कहा : मुझे बहुत ख़ुशी है कि आज आपके प्रोग्राम में शामिल होने का मौक़ा मिला है। मैंने आपकी जमाअत से बारे में अपनी पार्टी के मैंबरान से सुन रखा था। आपकी तरफ़ से दावत मिलने के बाद मैंने मज़ीद रिसर्च की। आपकी जमाअत को दुनिया में एक अलग स्थान प्राप्त है। आप अपनी इन्सानियत के लिए मुहब्बत , ख़िदमते ख़लक़

के कामों और अमन के पैग़ाम के लिए जाने जाते हैं। आपकी जमाअत बेल्जियम में एंटी गरीशन में भी मिसाली है और नए साल के आरम्भ पर वक़ार अमल के माध्यम से सफाई करके एक मुनफ़रद प्राजेक्ट करती है।

मैं बहैसीयत यूरोपीयन पार्लीमेंट मैंबर अमन की कोशिशों में व्यस्त हूँ। हमने यूरोप में दो बड़ी जंगें देखी हैं मगर अब हम कोशिश कर रहे हैं कि कोई और जंग हमें ना देखनी पड़े। आपका पैग़ाम उतना मिसाली है कि अगर दुनिया की बड़ी ताक़तें इस पर अमल करें तो दुनिया में अमन क़ायम हो सकता है। आख़िर पर दोबारा आपका और आपकी जमाअत का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ और उम्मीद रखती हूँ कि हम अमन की कोशिशें जारी रखेंगे।

*इस के बाद बर्सल्ज़ के पुलिस कमिशनर, चीफ़ पुलिस ऑफीसर Chistane De Konick ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा: सबसे पहले मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आपने मुझे अपने प्रोग्राम में शामिल होने की दावत दी जिसकी मुझे बड़ी ख़ुशी है। जब 22 मार्च 2016 ई को मालबीक के मेट्रो स्टेशन पर हमला हुआ था तो मैं उस वक़्त वहां इंचार्ज था। मैंने वो देखा जो मैं कभी नहीं देखना चाहता था और ना ये चाहता हूँ कि आप में से कोई देखे। लोगों ने मेरे पांव में आकर दम तोड़ा। मुझे मुसलमानों पर बहुत ग़ुस्सा था कि कोई इन्सान मज़हब के नाम पर कैसे दूसरे इन्सान को क़त्ल कर सकता है। मगर आपकी जमाअत को जान कर, आप लोगों से मिलकर और आज आपके जलसा में शामिल हो कर मेरा मुसलमानों के बारे में नज़रिया बदल गया है। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे दोबारा अमन की राह दिखाई है। आपके माटो मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं ने मेरे दिल पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा है। आप के जलसा में मुझे एक विभिन्न इस्लाम देखने को मिला है। एक ऐसा इस्लाम जो अमन पसंद है। इस से मुझे बहुत सन्तोष हासिल हुआ।

इस के बाद 3 बज कर 40 मिनट पर जलसा के समापन इज्लास का नियमित आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय मुहम्मद मज़हर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला बेल्जियम ने की और इस का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद एहतिशाम हाश्मी साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के मंज़ूम कलाम

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है

में से चुने हुए शेर अच्छी आवाज़ में पढ़ कर सुनाए।

इस के बाद आदरणीय वओनी साहिब ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अरबी क़सीदा

يَا عَيْنَ فَيْضِ اللّٰهِ وَالْعِرْفَانِ   يَسْعٰى اِلَيْكَ الْخَلْقُ كَالظَّمْآنِ

मैं से कुछ शेर अच्छी आवाज़ में पढ़ कर सुनाए

शैक्षिक ऐवार्ड का बांटना

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा के क्षेत्र में नुमायां कामयाबी हासिल करने वाले और उच्च नमूना दिखाने वाले छात्रको सनदात और मैडल प्रदान फ़रमाए। हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ से निम्नलिखित ख़ुशनसीब छात्रों ने शिक्षा के ऐवार्ड हासिल किए।

मलिक जुनैद अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुल्क बशारत महमूद साहिब A Levels & Sciences

मुहम्मद हामिद साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद राफ़े क़ुरैशी साहिब Bachelor inComputer Sciences

अदील अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब Bachelor in International Business

अदील अलरहमान साहिब पुत्र आदरणीय मक़सूद अलरहमान साहिब Bachelor in Applied Informatics

तैमूर अहमद सईद साहिब पुत्र आदरणीय मसऊद अहमद सईद साहिब Master of Business Administration

डाक्टर बाजवा नोमान अहमद साहिब पुत्र आदरणीय बाजवा मुहम्मद बूटा साहिब Master in Medicine

सिकदर महमूद साहिब पुत्र आदरणीय सिकदर माहरोफ़ साहिब Bachelor in Computer Sciences

तय्यब अहमद भट्टी साहिब पुत्र आदरणीय नासिर अहमद भट्टी साहिब A Levels - Sciences

अहमद शहज़ाद साहिब पुत्र आदरणीय मंसूर अहमद साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

शाह ज़ैन साहिब पुत्र आदरणीय मंसूर अहमद साहिब Bachelor in Civil Engineering

वहीद अहमद साहिब पुत्र आदरणीय वासिफ़ अहमद भट्टी साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

मुबीन अहमद गुल साहिब पुत्र आदरणीय चौधरी ताहिर गुल साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

जाज़िब अहमद साहिब पुत्र आदरणीय इदरीस अहमद साहिब A Levels - Modern Languages & Sciences

मुहम्मद फ़ैज़ान साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद इरशाद साहिब Bachelor of Law

लुक़्मान करीम साहिब पुत्र आदरणीय क़रीमुल्लाह साहिब A Levels - Business Management

अहमद एहसान साहिब पुत्र आदरणीय नूरुद्दीन अहमद साहिब Master of Law

एहतिशाम हाश्मी साहिब पुत्र आदरणीय रफ़ीक़ हाश्मी साहिब A Levels - Sciences & Mathematics

ख़ुर्रम शहज़ाद मलिक साहिब पुत्र आदरणीय मलिक मुहम्मद अतहर साहिब Bachelor of Law

राना तलहा साहिब पुत्र आदरणीय राना ज़ुबैर अहमद साहिब Bachelor in Business Management

डाक्टर इदरीस साहिब पुत्र आदरणीय रफ़ीक़ अहमद साहिब Master of Medicine Master in Medical & Pharmaceutical Research

सुलतान अहमद बट साहिब पुत्र आदरणीय हुमायूँ बट साहिब Bachelor in Electronic Engineering

तमसील अहमद साहिब पुत्र आदरणीय फ़ख़्र अहमद साहिब A Levels -Greek & Mathematics

अहमद ज़ीशान मुही उद्धर्म साहिब पुत्र आदरणीय नूरुद्दीन अहमद साहिब Bachelor of Medicine

कृष्ण अहमद साहिब पुत्र आदरणीय अज़ीज़ अहमद साहिब Bachelor of Technology Electronics and Telecom

बह्ज़ाद इक़बाल साहिब पुत्र आदरणीय परवेज़ इक़बाल साहिब A Levels - Economy & Modern Languages

इमरान सईद साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद सईद साहिब A Levels - Morden Languages and Sceinces

नबील अहमद साहिब पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब Certified Information Systems Security Professional

तस्लीम अहमद रज़ा साहिब पुत्र आदरणीय नईम शाहीन साहिब Master in Industrial Sciences

सरमद अकबर अहमद साहिब पुत्र आदरणीय अकबर अहमद साहिब A Levels - Mordern Languages and Sceinces

मुहम्मद बिलाल ख़ान साहिब पुत्र आदरणीय मादामे एहसान सिकन्दर साहिब

अनोश इक़बाल साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद इक़बाल साहिब A Levels - Informatics and Netwowrking

शिक्षाी ऐवार्ड की तक़रीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मजलिस ख़ुद्दाम अलाहमदीह बेल्जियम में कारकर्दगी के लिहाज़ से अव्वल आने वाली मजलिस मजलिस Antwerpen को इलम इनामी प्रदान फ़रमाया। इस के बाद 4 बज कर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना इख़ततामी ख़िताब फ़रमाया।

(शेष.....................)

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 30 May 2019 Issue No. 22

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ज़कात की अदायगी एक अहम शरई कर्तव्य है।

जिस तरह नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और मस्जिद में जमाअत के साथ फ़र्ज़ हैं इसी तरह ज़कात फ़र्ज़ है

ज़कात इस्लाम के पाँच बुनियादी अरकान में से एक रुकन है और निसाब वाले मुसलमान के लिए इस की अदायगी एक अहम शरई कर्तव्य की हैसियत रखता है। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ज़कात की अदायगी के महत्व के बारे में बयान फ़रमाते हैं:

"मैं फिर आप लोगों की ख़िदमत में यह निवेदन करता हूँ कि जिस तरह हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़कात के एक जगह जमा कर के बांटने करने का नमूना स्थापित किया था जिस तरह ख़ुदा के पाक कलाम ने इस के कुछ खर्च करने के स्थान बताए थे इसी तरह जब तक कि हमारा सिलसिला उसको एक जगह जमा कर के उन्हीं खर्च के स्थान पर नहीं लगाता उसूल इस्लाम के चार उसूलों में से एक प्रमुख नियम का पालन करने वाला नहीं कहला सकता। जिस तरह नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और मस्जिद में जमाअत के साथ फ़र्ज़ हैं इसी तरह ज़कात फ़र्ज़ है और इस का एक जगह जमा कर के बांटना और उन स्थानों पर लगाना जो उस के लिए क़रार दिए गए हैं फ़र्ज़ है। अत: इस फ़र्ज़ की अदायगी को इसी तरह ज़रूरी समझो जिस तरह नमाज़ और रोज़ा और हज के फ़राइज़ की अदायगी को ज़रूरी समझते हो।

(किताब माली निज़ाम भाग 2 पृष्ठ 30)

ज़कात के निसाब के बारे में सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

"याद रखना चाहिए कि यह टेक्स जिसे ज़कात कहते हैं आय पर नहीं है बल्कि पूंजि और लाभ सबको मिलाकर इस पर लगाया जाता है और इस तरह अढ़ाई प्रति-शत वास्तव में कई बार लाभ का पच्चास प्रतिशत बन जाता है।

(अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम, अन्वारुल उलूम भाग 8 पृष्ठ 306)

ज़ेवरों और नक़द रुपए की ज़कात के बारे से सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला अय्यदहुल्लाह तआला अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया है :

"चांदी के लिए चांदी वाला और सोने के लिए सोने वाला वही निसाब होगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माना में हुज़ूर ने ख़ुद जारी फ़रमाया था और जहां तक नक़द रुपएय के लिए निसाब ज़कात की बात है तो उस वक़्त दुनिया के अधिकतर सोने को ही रूपए के माप दण्ड अपनाए हुए हैं इसलिए नक़द रुपए की ज़कात में भी सोने को ही स्तर समझा जाएगा।

(चिट्ठी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बनाम सदर साहिब मज्लिस इफ्ता)

आँ हज़रत ने चांदी के लिए साढ़े बावन(521/2) तौला और सोने के लिए साढ़े सात (71/2)तौला निसाब निर्धारित फ़रमाया है।

इस नियम से जिसके पास साढ़े बावन(521/2) तौला(612ग्राम) चांदी मौजूद है और इस पर एक साल का समय गुज़र जाए तो इस पर 1/40 हिस्सा अर्थात अढ़ाई फ़ीसद ज़कात देना फ़र्ज़ है।

इसी तरह जिसके पास साढ़े सात (71/2)तौला(87ग्राम) सोना मौजूद हो या उस के बराबर नक़द रक़म मौजूद हो और इस पर एक साल का अरसा गुज़र जाए इस पर भी शरीयत के अनुसार 1/40 हिस्सा अर्थात अढ़ाई फ़ीसद ज़कात देना फ़र्ज़ है।

ज़ेवरों पर ज़कात के बारे में याद रखना चाहीए कि अगर तो ज़ेवर पहनने के लिए रखा गया है और व्यक्तिगत प्रयोग में आता है और कभी कभी ज़रूरतमंद को भी प्रयोग के लिए दे दिया जाता है तो ऐसे ज़ेवर पर ज़कात देना अच्छी बात है। ज़ेवरों की ज़कात के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:-

"जो ज़ेवर पहना जाए और कभी कभी ग़रीब औरतों को प्रयोग के लिए दिया जाए, कुछ का उस के बारे में ये फ़तवा है कि इस की कुछ ज़कात नहीं। और जो ज़ेवर पहना जाए और दूसरों को प्रयोग के लिए ना दिया जाए इस में ज़कात देना बेहतर है कि वह अपने नफ़स के लिए प्रयोग होता है। इसी पर हमारे घर में अमल करते हैं और हर साल के बाद अपनी मौजूदा ज़ेवर की ज़कात देते हैं और जो ज़ेवर

पृष्ठ 1 का शेष

الْبِحَارُ سُجِّرَتْ۔ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ۔ وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ۔ بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ۔ وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ۔)

(अत्तकवीर:5 से11) अर्थात उस ज़माना में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी। उच्च स्तर की सवारी और भार ढोना जिन से पूराने दिनों में हुआ करती थी। अर्थात उस ज़माना में सवारी का इंतिज़ाम कोई ऐसा पैदा होगा कि ये सवारियां बेकार हो जाएंगी। इस से रेल का ज़माना अभिप्राय था। वे लोग जो ख़्याल करते हैं कि इन आयतों का क़ियामत से सम्बन्ध है वे नहीं सोचते कि क़ियामत में ऊंटनियां हमलदार कैसे रह सकती हैं, क्योंकि अशार से मुराद गर्भवाली ऊंटनियां हैं। फिर लिखा है कि इस ज़माना में चारों तरफ़ नहरें फैल जाएंगी और किताबें बहुत अधिक प्रकाशित होंगी। अत: ये सब निशान इसी ज़माना के बारे में थे।

मसीह मौऊद का प्रकटन का स्थान

अब रहा मकान के बारे में।अत: याद रहे कि दज्जाल का निकलना पूर्व में बताया गया है। जिससे हमारा मुल्क मुराद है अत: हजजुल किराम: के लेखक ने लिखा है कि फ़ितन दज्जाल का ज़हूर हिन्दुस्तान में हो रहा है और यह ज़ाहिर है कि ज़हूर मसीह उसी जगह हो जहां दज्जाल हो। फिर उस गावं का नाम कदा क़रार दिया है जो कादियान का संक्षिप्त है। यह संभव है कि यमन के इलाक़ा में भी इस नाम का कोई गांव हो लेकिन याद रहे कि यमन हिजाज़ से पूर्व में नहीं बल्कि दक्षिण में है। आख़िर इसी पंजाब में एक और कादियान भी तो लुधियाना के क़रीब है।

इस के इलावा ख़ुद कुदरत ने इस विनीत का नाम जो रखवाया है तो वह भी एक सूक्ष्म इशारा इस तरफ़ रखता है। क्योंकि ग़ुलाम अहमद का कदायनी की संख्या जमल के हिसाब से पूरे तेराह सौ(1300)निकलते हैं। अर्थात इस नाम का इमाम चौदहवीं सदी के आरम्भ पर होगा। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इशारा उसी तरफ़ था।

आकाश तथा धरती के निशान

निशान भी एक चिन्ह थी। आकाशीय निशान ने अकाल, ताऊन और हैज़ा की सूरत पकड़ ली। ताऊन वह ख़तरनाक अज़ाब है कि उसने गर्वनमैंट तक को हिला दिया अगर उस का क़दम बढ़ गया तो देश साफ़ हो जाएगा। धरती के निशान लड़ाईयां तथा भूकम्प थे जिन्होंने देश को तबाह किया। अल्लाह की तरफ से भेजे गए के लिए यह भी ज़रूर है कि वह अपने सबूत में आसमानी निशान दिखाए। एक लेखराम का निशान क्या कुछ कम निशान था। एक कुश्ती के तौर कई साल तक एक शर्त बधी रही। पाँच साल बराबर जंग होती रही। दोनों पक्षों ने इश्तिहार दिए। आम प्रसिद्धि हो गई , ऐसी प्रसिद्धि कि जिसकी मिसाल भी कठिन है। फिर ऐसा ही घटना हुई जैसे कि कहा गया था क्या इस घटना की कोई और उदाहरण है? धर्म महोत्सव के बारे में भी कई दिन पहले ऐलान किया कि हमको अल्लाह तआला ने सूचना दी है कि हमारा मज़मून सब पर ग़ालिब रहेगा। जिन लोगों ने इस महान और रौब वाले जलसा को देखा है वे ख़ुद ग़ौर कर सकते हैं कि ऐसे जलसा में ग़लबा पाने की ख़बर समय से पहले दे देनी कोई अटकल या तुक्क ना थी। फिर अन्त में वही हुआ जैसे कहा गया।۔وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

(मफ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 44 से 44)

रुपया की तरह जमा रखा जाए उस की ज़कात में किसी को भी मतभेद नहीं।

(अलहकम17 नवंबर1905 ई पृष्ठ 11)

रमज़ानुलमुबारक का पवित्र महीना जारी है। इस महीने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत अधिक ज़कात तथा सदक़ा ख़ैरात फ़रमाया करते थे और आपका हाथ तेज़ आंधी की तरह चलता था।

इस लिए निसाब वाले दोस्तों तथा औरतों की सेवा में गुज़ारिश है कि वे शीघ्र इस प्रमुख कर्तव्य को पूर्ण करने की तरफ़ तवज्जा फ़रमा कर अल्लाह तआला से बदला प्राप्त करने वाले हों। अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ दे। आमीन

ज़कात की सारी रक़म केन्द्र में जमा होगी और उसे ख़ुद बांटने की इजाज़त नहीं है।

(नाज़िर बैयतुल माल आमद कादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad